माज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

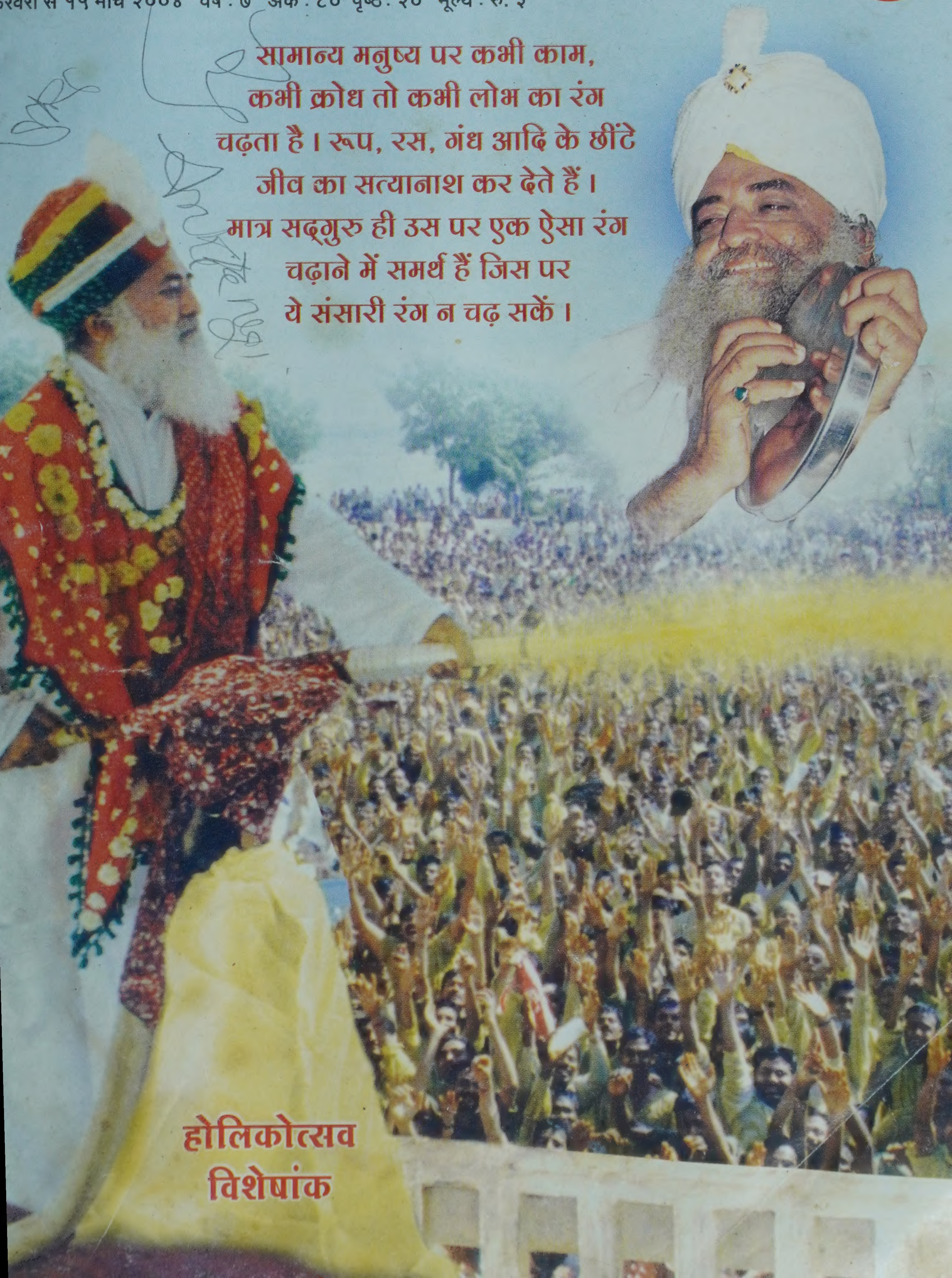
संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

रवरी से १५ मार्च २००४ वर्ष : ७ अंक : ८० पृष्ठ : २० मूल्य : रु. ३

सामान्य मनुष्य पर कभी काम,
कभी क्रोध तो कभी लोभ का रंग
चढ़ता है। रूप, रस, गंध आदि के छींटे
जीव का सत्यानाश कर देते हैं।
मात्र सद्गुरु ही उस पर एक ऐसा रंग
चढ़ाने में समर्थ हैं जिस पर
ये संसारी रंग न चढ़ सकें।



होलिकोत्सव विशेषांक

लोक कल्याण सेतु

वर्ष : ७ अंक : ८०

१६ फरवरी २००४ मूल्य : रु. ३/-

सदस्यता शुल्क : भारत में

(१) पंचवार्षिक : १०० रु. (२) आजीवन : ३०० रु.

विदेशों में : (१) पंचवार्षिक : **US $ 50** (२) आजीवन : **US $ 125**

कार्यालय **'लोक कल्याण सेतु'**

अखिल भारतीय श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-३८०००५.

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११.

e-mail : ashramindia@ashram.org

web-site : www.ashram.org

Subject to Ahmedabad Jurisdiction

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रं. और सदस्यता क्रं. अवश्य लिखें।

होली की सावधानियाँ

प्राचीन काल में पलाश के फूलों से तैयार सात्त्विक रंग अथवा गुलाल, कुमकुम, हल्दी से होली खेली जाती थी। लेकिन आज के परिवर्तन-प्रधान युग में अनेक प्रकार के रासायनिक तत्त्वों से बने पक्के रंगों का तथा कई स्थानों पर तो वार्निश, ऑईल पेंट व चमकीले पेंट्स का भी होली खेलने में उपयोग किया जाता है।

होली खेलते समय निम्नलिखित सावधानियाँ बरतने से आप हानिकारक रसायनयुक्त रंगों के दुष्प्रभाव से बच सकते हैं : ☞ सावधानी रखिये कि कहीं होली का रंग आँख या मुँह में न चला जाय अन्यथा आँखों की ज्योति अथवा फेफड़ों व आँतों में हानि पहुँचा सकता है। अतः जब कोई रंग लगाये तब मुँह व आँखें बंद रखिये।

☞ होली खेलने से पहले ही अपने शरीर पर नारियल, सरसों अथवा खाद्य तेल की अच्छी तरह से मालिश कर लीजिये ताकि त्वचा पर पक्के रंगों का प्रभाव न पड़े और साबुन लगानेमात्र से ही वे रंग निकल जायें। अपने बालों में भी तेल की अच्छी तरह से मालिश कर लीजिये ताकि रासायनिक रंगों का सिर पर कोई प्रभाव न पड़े।

इस प्रकार की मालिश के अभाव में रासायनिक रंग त्वचा पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं तथा त्वचा में कुछ दिनों तक जलन एवं शुष्कता बनी रहती है।

☞ जो लोग होली खेलने में वार्निश, आईल पेंट या अन्य किसी प्रकार के चमकदार पेंट का उपयोग करते हैं, ऐसे लोगों से सावधान रहिये। भूलकर भी उस टोली में शामिल न होइये, जिसमें इस प्रकार के घातक पदार्थों से होली खेली जाती हो। ये रंग चेहरे की त्वचा के लिए अत्यधिक हानिकारक साबित हुए हैं। कभी-कभी तो इनसे पूरा चेहरा ही काला या दागदार बन जाता है। यदि कोई आप पर ऐसा रंग जबरन लगा भी दे तो तुरंत ही घर पहुँचकर रूई के फाहे को मिट्टी के तेल में डुबोकर उससे धीरे-धीरे रंग साफ कर लीजिये। फिर साबुन लगाकर चेहरा धो डालिये।

☞ त्वचा पर लगे पक्के रंग को बेसन, आटा, दूध, हल्दी व तेल के मिश्रण से बना उबटन बार-बार लगाकर एवं उतारकर साफ किया जा सकता है। यदि उबटन के पूर्व उस स्थान को नींबू से रगड़कर साफ कर लिया जाय तो और भी लाभ होगा। नाखूनों के आस-पास की त्वचा में जमे रंग को भी नींबू द्वारा घिसकर साफ किया जा सकता है।

☞ होली घर के बजाय बरामदे में या सड़क पर ही खेलें ताकि घर के भीतर रखी वस्तुओं पर उनका दुष्प्रभाव न पड़े और होली खेलते समय फटे या घिसे हुए पतले वस्त्र न पहनें ताकि किसी भी प्रकार की लज्जाजनक स्थिति का सामना न करना पड़े।

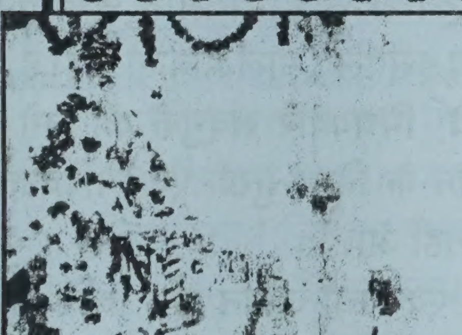
☞ होली के अवसर पर देहातों में भाँग व शहरों में शराब पीने का अत्यधिक प्रचलन है। पर नशे के मद में चूर होकर व्यक्ति विवेकहीन पशुओं जैसे कृत्य करने लगता है। क्योंकि नशा मस्तिष्क से विवेक का नियंत्रण हटा देता है, बुद्धि में उचित निर्णय लेने की क्षमता का ह्रास कर देता है और मनुष्य मन, वचन व कर्म से अनेक प्रकार के असामाजिक कार्य कर बैठता है। अतः इस पर्व पर किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थ का सेवन न करें।

☞ शिष्टता व संयम का पालन करें। भाई सिर्फ भाइयों की व बहनें सिर्फ बहनों की ही टोली में होली खेलें। बहनें घर के परिसर में ही होली खेल लें तो और भी अच्छा है ताकि दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों की कुदृष्टि उन पर न पड़े।

☞ जो लोग कीचड़-गंदगी व पशुओं के मल-मूत्र जैसे दूषित पदार्थों से होली खेलते हैं, वे खुद तो अपवित्र होते ही हैं, औरों को भी अपवित्र करने का पाप अपने सिर पर चढ़ाते हैं। अतः होली खेलते समय इनका प्रयोग न करें।

☞ होली खेलते समय शरीर पर गहने आदि कीमती आभूषण धारण न करें, अन्यथा भीड़ में उनके चोरी या गुम हो जाने की संभावना बनी रहती है।

अनुक्रम — पृष्ठ



होलिकोत्सव पर पूज्य बापूजी का संदेश

संस्कृति की पहचान का पुनीत पर्व : होली

होली भारतीय संस्कृति की पहचान का एक पुनीत पर्व है। एक-दूसरे में छुपे हुए ईश्वरत्व को, आनंद को, सहजता को, निरहंकारिता के एवं सरलता, सहजता के सुख को प्रकट करने का उत्सव है 'होलिकोत्सव'।

होली... एक संकेत है वसंतोत्सव के रूप में ऋतु-परिवर्तन का... एक अवसर है भेदभाव की भावना को भुलाकर पारस्परिक प्रेम और सद्‌भावना प्रकट करने का... एक यज्ञ है अपने कुसंस्कारों एवं दुर्गुणों की आहुति देने का... एक संदेश है जीवन में ईश्वरोपासना एवं प्रभुभक्ति बढ़ाने का...

विषय-विकार एवं भोग-वासना पर भक्ति और ज्ञान की विजय का उत्सव... स्वास्थ्य की सुरक्षा का उत्सव... राग-द्वेष को भुलाकर, उसे अग्नि में जलाकर पुनः अपने दिल जोड़ने का उत्सव है होलिकोत्सव...

इस उत्सव ने कितने ही खिन्न मनों को प्रसन्न किया है, कितने ही अशांत-उद्विग्न चेहरों पर रौनक लायी है...

होलिकोत्सव से मानव-जाति ने बहुत कुछ लाभ उठाया है। इस उत्सव में लोग एक-दूसरे को अपने-अपने रंग से रँगकर, मन की दूरियों को मिटाकर एक-दूसरे के नजदीक आते हैं। वैरभाव को भुलाकर आनंद और उल्लास जगाते हैं। यह उत्सव जीवन में नया रंग लाने का उत्सव है... आनंद जगाने का उत्सव है... छोटे-बड़े का भेद मिटाकर सबको अखण्ड आनंद के अधिकारी बनने में मदद करनेवाला उत्सव है। **'परस्पर देवो भव।'** की भावना जगानेवाला उत्सव है... विकारी भावों पर धूल डालने एवं निर्विकार नारायण का प्रेम जगाने का उत्सव है... लोगों के मन के खटके को दूर करके परस्पर सुहृदता जगाने का उत्सव है... नकली सुखों को, नकली रंगों को हटाकर असली सुख पाने का, असली रंग में रँगने का उत्सव है।

मीरा ने भी कहा है :

श्याम पिया ! मोरी रँग दे चुनरिया।
ऐसी रँग दे कि रंग नाहीं छूटे,
धोबिया धोये चाहे सारी उमरिया...

हमारी इन्द्रियों पर, हमारे तन और मन पर संसार का रंग पड़ता है और उतर जाता है लेकिन भक्ति और ज्ञान का रंग अगर भूल से भी पड़ जाय तो मृत्यु के बाप की भी ताकत नहीं कि उस रंग को हटा सके। इसी भक्ति और ज्ञान के रंग में खुद को रँगने का पर्व है होली।

होली हुई तब जानिये, पिचकारि सद्‌गुरु की लगे।
सब रंग कच्चे जाँय उड़, यक रंग पक्के में रँगें॥

होली का उत्सव अति प्राचीन उत्सव है। पहले इस उत्सव (वसंतोत्सव) में नये गेहूँ और नये जौ आदि की यज्ञ में आहुतियाँ दी जाती थीं और बाद में अन्न ग्रहण किया जाता था। अब ये सब परम्पराएँ रसायनयुक्त रंगों से खेली जानेवाली होली के रूप में परिणत हो गयी हैं और वेदमंत्रों का उच्चारण अश्लील गीतों में परिणत हो गया है।

आज भी कच्चे चने भूने जाते हैं जिसे 'होला' कहते हैं। यह 'होला' वही प्राचीन होली का प्रतीक है।

शब्दकोष ग्रंथों के अनुसार भूने हुए अन्न



को संस्कृत भाषा में 'होलका' नाम से पुकारा जाता है। अतः इसी नाम पर होलिकोत्सव का प्रारंभ मानकर इस पर्व को हम वेदकालीन कह सकते हैं। आज भी होलिका-दहन के समय डंडे पर बँधी गेहूँ-जौ की बालियों को भूनते हैं - यह प्राचीन होलिकोत्सव की ही स्मृति दिलाता है।

श्री भोले बाबा ने 'वेदान्त छंदावली' में कहा है :

होली हुई तब जानिये, संसार जलती आग हो।
सारे विषय फीके लगें, नहिं लेश उनमें राग हो ॥
हो शांति कैसे प्राप्त निशदिन, एक यह ही ध्यान हो।
संसार दुःख कैसे मिटे, किस भाँति से कल्याण हो ॥

होली का त्यौहार सत्यनिष्ठा की विजय का त्यौहार है। यह पर्व हमें बताता है कि सत्य में, ईश्वर में निष्ठा रखनेवाले की मदद के लिए प्रकृति अपने अटल नियम को भी बदल देती है। इस पर्व के पीछे अपने ऋषियों का यही ध्येय रहा था कि उनकी संतान इस प्रसंग से प्रेरणा लेकर सत्य की ओर चले, शांति की ओर चले, अमरता की ओर चले। इसीलिए भोले बाबा ने कहा होगा :

होली अगर है खेलनी, तो संत सम्मत खेलिये।
संतान शुभ ऋषि मुनिन की, मत संत आज्ञा पेलिये ॥

ऋषियों के अनुभव को जिन्होंने अपना अनुभव बनाया है, वे ऋषियों के सच्चे संतानरूपी संत ही होली का सच्चा तत्त्व समझा सकते हैं। इसीलिए संतों के कहे अनुसार ही होली खेलें। होली रंगों का त्यौहार है। यह एक संजीवनी है जो साधक की साधना को पुनर्जीवित करती है। यह समाज में प्रेम का संदेश फैलाने का पर्व है।

होली मात्र लकड़ी के ढेर को जलाने का त्यौहार नहीं है, यह तो चित्त की दुर्बलताओं को दूर करने का, मन की मलिन वासनाओं को जलाने का पवित्र दिन है। अपने दुर्गुणों, व्यसनों व बुराइयों को जलाने का पर्व है... अच्छाइयाँ ग्रहण करने का पर्व है... समाज में स्नेह का संदेश फैलानेवाला पर्व है...

सत्य, शांति, प्रेम, दृढ़ता की विजय होती है इसकी याद दिलाता है होली का दिन। यह हिरण्यकशिपुरूपी आसुरी वृत्ति तथा होलिकारूपी कपट के पराजय का दिन है। यह पवित्र पर्व परमात्मा में दृढ़ निष्ठावान के आगे प्रकृति द्वारा अपने नियमों को बदल देने की याद दिलाता है। मानव को भक्त प्रह्लाद की तरह विघ्न-बाधाओं के बीच भी भगवन्निष्ठा टिकाये रखकर संसार-सागर से पार होने का संदेश देनेवाला पर्व है होली।

आज के दिन से विलास, वासनाओं का त्याग करके परमात्म-प्रेम, सद्भावना, सहानुभूति, इष्टनिष्ठा, जपनिष्ठा, स्मरणनिष्ठा, सत्संगनिष्ठा, स्वधर्मपालन, करुणा, दया आदि दैवी गुणों का अपने जीवन में विकास करना चाहिए। भक्त प्रह्लाद जैसी दृढ़ ईश्वरनिष्ठा, प्रभुप्रेम, सहनशीलता व समता का आह्वान करना चाहिए।

होली अर्थात् हो ली... अर्थात् जो हो गया सो गया... कल तक जो होना था वह हो चुका... उसे भूल जाओ। निंदा हो गयी सो हो गयी, प्रशंसा हो गयी सो हो गयी, जो कुछ हो गया सो हो गया। तुम रहो मस्ती में, आनंद में।

जो बीत गया उस समय, वस्तु अथवा दुःख को याद करके अपने वर्तमान को दुःखमय न बनायें वरन् उसे भूलकर वर्तमान को सुखी बनाने की कला सीख लें। होली का त्यौहार यही संदेश देता है। वर्तमान को सुखी बनाने की कला महापुरुषों के सत्संग से मिलती है। उनके पावन सान्निध्य से ही वर्तमान सुख का अनुभव होता है। शायद इसीलिए भोले बाबा ने कहा है :

होली हुई तब जानिये, पिचकारि सद्गुरु की लगे।

क्योंकि सद्गुरु के ज्ञान के बिना सुखी एवं निश्चिन्त जीवन जीने की कला नहीं आती।

आइये, आज से एक नया जीवन शुरू करें। जो दीन-हीन हैं, शोषित हैं, उपेक्षित हैं, पीड़ित हैं, अशिक्षित हैं, समाज के उस अंतिम व्यक्ति को भी सहारा दें। जिंदगी का क्या भरोसा ? कोई कार्य ऐसा कर लें कि जिससे हजारों हृदय आशीर्वाद देते रहें। चल निकलें ऐसे पथ पर कि जिस पर चलकर कोई दीवाना प्रह्लाद बन जाय।

होली का उत्सव हमें यही पावन संदेश देता है कि हम भी अपने जीवन में आनेवाली विघ्न-बाधाओं का धैर्यपूर्वक सामना करें एवं कैसी भी विकट परिस्थितियाँ आयें किंतु प्रह्लाद की तरह ही ईश्वर में अपनी श्रद्धा को अडिग बनाये रखें।

जहरीले रंगों के स्थान पर परम शुद्ध, परम पावन परमात्मा के नाम-संकीर्तन के रंग में खुद रँगें और दूसरों को भी रँगायें। छोटे-बड़े के, मेरे-तेरे के भेदभाव को भूलकर सबमें उसी एक सत्यस्वरूप, चैतन्यस्वरूप परमात्मा को निहारकर अपना जीवन धन्य बनाने के

मार्ग पर अग्रसर हों।

संतों ने कहा है : 'संसार में हर व्यक्ति अपना-अपना ही रंग लिये खड़ा है। सामान्य मनुष्य पर तो कभी काम की वृत्ति का रंग चढ़ता है, कभी क्रोध की वृत्ति का तो कभी लोभ का रंग चढ़ता है...। मानव इससे इतना विषयासक्त हो जाता है कि उसमें से निकल नहीं पाता। तरह-तरह के रूप, रस, गंध आदि के छींटें जीव का सत्यानाश कर देते हैं। मात्र सद्गुरु ही उस पर एक ऐसा रंग चढ़ाना चाहते हैं जिस पर रूप, रस, गंध आदि का रंग न चढ़ सके।'

इन विषयों के रंग से बचाने के लिए सद्गुरु जो रंग चढ़ाना चाहते हैं, वह है परमात्म-रंग। एक बार उस रंग में रँग गये तो फिर विषयों का रंग जीव पर कतई नहीं चढ़ सकता। वह रंग ऐसा पक्का होता है कि :

साहेब है मेरो रंगरेज, चुनरी मोरी रँग डाली।
धोये से छूटे नहीं, दिन दिन होत सुरंग,
शाही रंग छुड़ाय के, दियो मजीठा रंग।

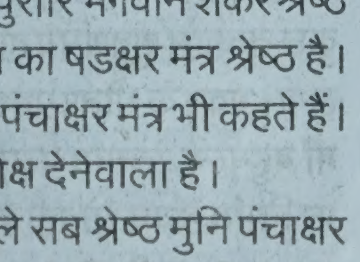
सूरदासजी ने इसी बात को अपने ढंग से कहा है :

सूरदास कारी कामरी पर चढ़े न दूजो रंग॥

अपनी उच्छृंखलता, उद्दंडता से अपना नुकसान न हो इसकी कदम-कदम पर सावधानी रखना। ऐसी परिस्थितियों से बचकर रहना जो आपको दारू, गाँजा, भाँग रूपी जहरीले रंगों से रँगना चाहती हैं। आप तो बस, अपने को हरिभक्ति के रंग से, प्रभु एवं प्रभु के संतों की मस्ती में रँग देना... इतना रँग डालना, इतना रँग डालना कि वह रंग कभी न उतरे...

करोगे न हिम्मत... उठो एवं चल पड़ो आत्मसाक्षात्कार की ओर... किन्हीं संत-महापुरुष की शरण जाकर उनके साथ होली खेलो। उनके रंग में रँग जाओ तो तुम्हारी एक क्षण की होली भी तुम्हें महान एवं अमर बना देगी।

होली के पर्व पर हम सब प्रभु से प्रार्थना करें कि 'हे प्रभु ! रँग दे मेरी चुनरी... तेरे रंग में ऐसी रँग दे कि वह रंग कभी न उतरे। संसार का कच्चा रंग तो स्नान के बाद उतर जायेगा लेकिन अगर तेरी भक्ति का रंग लग जाय तो उस रंग के आगे दूसरे सभी रंग फीके पड़ जायेंगे, जबकि भक्ति का रंग कभी नहीं उतरेगा। मेरा जीवन उन्नत होता जाय... गुरु पिया ! प्रभु पिया !! श्याम पिया !!! मेरी रँग दे चुनरिया...'



भगवान शिव के षडक्षर एवं पंचाक्षर मंत्र का माहात्म्य

ज्योतिर्मात्रस्वरूपाय निर्मलज्ञानचक्षुषे।
नमः शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिंगमूर्तये॥

'ज्योतिमात्र जिनका स्वरूप है, निर्मल ज्ञान ही जिनका नेत्र है, जो लिंगस्वरूप ब्रह्म हैं उन परम शांत, कल्याणमय भगवान शिव को नमस्कार है।'

ऋषि बोले : ''सूतजी ! हम लोग त्रिपुर-विनाशक शिवजी के मंत्रों की महिमा सुनना चाहते हैं।''

सूतजी ने कहा : ''मुनियो ! मरणधर्मा मनुष्यों के लिए इतना ही सबसे उत्तम एवं सनातन श्रेय है कि भगवान महेश्वर की कथा में अकारण भक्तिभाव का उदय हो। समस्त पुण्यों, श्रेय के सम्पूर्ण साधनों और समस्त यज्ञों में जपयज्ञ को ही सर्वोत्तम माना गया है। जैसे सब देवताओं में त्रिपुरारि भगवान शंकर श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार सब मंत्रों में शिव का षडक्षर मंत्र श्रेष्ठ है। उसीको प्रणव से रहित होने पर पंचाक्षर मंत्र भी कहते हैं। वह जप करनेवाले पुरुषों को मोक्ष देनेवाला है।

सिद्धि की इच्छा रखनेवाले सब श्रेष्ठ मुनि पंचाक्षर मंत्र का सम्यक् रूप से सेवन करते हैं। शिवजी के शुभ पंचाक्षर मंत्र में सर्वज्ञ, परिपूर्ण, सच्चिदानंदस्वरूप भगवान शिव सदा रमते रहते हैं। यह मंत्रराज सम्पूर्ण उपनिषदों का आत्मा है। इसके जप से मुनियों ने निरामय परब्रह्म का साक्षात्कार किया है। 'नमः शिवाय' मंत्र में 'नमः' पद के अर्थभूत नमस्कार के द्वारा जीवभाव परमात्मा शिव में मिलकर तद्रूप हो जाता है। अतः वह मंत्र साक्षात् परब्रह्मस्वरूप है। संसार-बन्धन में बँधे हुए देहधारियों के हित की कामना से स्वयं भगवान शिव ने 'ॐ नमः शिवाय' इस आदि मंत्र का प्रतिपादन किया है। यह मंत्र सम्पूर्ण ज्ञान की निधि है। यह मोक्षमार्ग को प्रकाशित करनेवाला दीपक है। अविद्या के समुद्र को सोखनेवाला बड़वानल है और महापातकों के जंगल को जला डालनेवाला दावानल है। अतः यह मंत्र सब कुछ देनेवाला माना गया है। यह मंत्र सदा पवित्र है। 'शिव' यह दो अक्षर का मंत्र ही बड़े-बड़े पातकों का नाश करने में समर्थ है और इसमें 'नमः' पद जोड़ दिया गया, तब तो यह मोक्ष देनेवाला हो जाता है। जो गुरु निर्मल, शांत, साधु स्वभाव के, स्वल्पभाषी, काम-क्रोध से रहित, सदाचारी और जितेन्द्रिय हों, उनके द्वारा दयापूर्वक दिया हुआ मंत्र शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है।



शिवभक्त राजा चन्द्रसेन और भक्त श्रीकर गोप

उज्जयिनी (वर्तमान में उज्जैन, म.प्र.) में चन्द्रसेन नामक एक राजा थे। वे भगवान महाकाल का पूजन करते थे। शिवजी के पार्षदों में अग्रगण्य तथा अमंगलों को जीतनेवाले विश्ववंदित मणिभद्रजी राजा चन्द्रसेन के सखा हो गये थे। एक समय उन्होंने राजा पर प्रसन्न होकर उन्हें दिव्य चिन्तामणि प्रदान की, जो कौस्तुभमणि तथा सूर्य के समान देदीप्यमान थी। वह देखने, सुनने अथवा ध्यान करने पर भी मनुष्यों को मनोवांछित वस्तु प्रदान करती थी। राजा उस चिन्तामणि को कंठ में धारण करके जब राजसिंहासन पर बैठते थे, तब देवताओं में सूर्यनारायण की भाँति शोभायमान होते थे। राजा चन्द्रसेन के विषय में ऐसा सुनकर समस्त राजाओं के मन में उस मणि के प्रति लोभ उत्पन्न हो गया। उन सबने बहुत-सी सेना साथ लेकर उज्जयिनी पर आक्रमण किया और उसके चारों द्वारों को घेर लिया। अपनी पुरी को घिरी हुई देख राजा चन्द्रसेन भगवान महाकाल की शरण में गये और मन को संदेहरहित करके दृढ़ निश्चय के साथ उपवासपूर्वक दिन-रात अनन्य भाव से उनकी आराधना करने लगे।

उन्हीं दिनों उस नगर में कोई विधवा ग्वालिन रहती थी, जिसके एकमात्र पुत्र था। वह अपने पाँच वर्ष के बालक को लेकर भगवान महाकाल के मंदिर में गयी और राजा चन्द्रसेन द्वारा की हुई गिरिजापति की महापूजा के दर्शन किये। ग्वालिन के बालक ने भी वह सारी पूजा देखी। अतः घर आने पर उस बालक ने कौतूहलवश शिवजी की पूजा प्रारम्भ की, जो संसार से वैराग्य प्रदान करनेवाली है। उसने एक सुन्दर पत्थर लाकर उसे घर से थोड़ी ही दूरी पर एकान्त स्थान में रख दिया और उसीको शिवलिंग माना, फिर अपने हाथ से मिलने लायक जो कोई भी फूल दिखायी दिये, उन सबका संग्रह करके उस बालक ने जल से शिवलिंग को स्नान कराया और भक्तिपूर्वक पूजन किया। तत्पश्चात् कृत्रिम अलंकार, चन्दन, धूप, दीप और अक्षत आदि से अर्चना करते मनःकल्पित दिव्य वस्तुओं से भगवान को नैवेद्य निवेदन किया। सुन्दर-सुन्दर पत्रों और फूलों से बार-बार पूजा करके भाँति-भाँति से नृत्य किया और बारंबार भगवान के चरणों में शीश झुकाया। इस प्रकार अनन्यचित्त होकर शिव की आराधना में लगे हुए अपने पुत्र को ग्वालिन ने बड़े प्यार से भोजन के लिए बुलाया। उसका मन तो पूजा में लगा हुआ था। माता के बहुत बुलाने पर भी उसे भोजन करने की इच्छा न हुई। तब उसकी माँ स्वयं उसके पास गयी और उसे शिव के आगे आँख बंद करके ध्यान लगाये बैठा देख हाथ पकड़कर खींचने लगी। इतने पर भी जब वह न उठा, तब उसने क्रोध में आकर उसे खूब पीटा। खींचने और मारने-पीटने पर भी जब उसका पुत्र नहीं आया, तब उसने वह शिवलिंग उठाकर दूर फेंक दिया और उस पर चढ़ायी हुई सारी पूजा-सामग्री नष्ट कर दी। यह देख बालक 'हाय-हाय' करके रो उठा। बालक पूर्वजन्म का संस्कारी आत्मा रहा होगा। रोष में भरी हुई ग्वालिन अपने बेटे को डाँट-डपटकर पुनः घर में चली गयी। भगवान शिव की पूजा को माता के द्वारा नष्ट हुई देख वह बालक 'देव! देव! महादेव!' की पुकार करते हुए सहसा मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। उसके नेत्रों से आँसुओं की धारा प्रवाहित हो रही थी। दो घड़ी बाद जब उसे चेत हुआ, तब उसने आँख खोली और देखा कि उसका वही निवासस्थान परम सुन्दर शिवालय हो गया है। मणियों के खंभे उसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। उसके द्वार, किवाड़ तथा मुख्य फाटक सब स्वर्णमय हो गये हैं। वहाँ की भूमि बहुमूल्य नीलमणि तथा हीरों की वेदिकाओं से सुशोभित है। यह सब देखकर वह हर्ष से परमानंद के समुद्र में निमग्न हो गया। तत्पश्चात् उस बालक ने अपनी माता के अपराध की शांति के लिए पृथ्वी पर मस्तक रखकर भगवान शिव को साष्टांग प्रणाम किया और कहा : 'देव! उमापते! मेरी माता का अपराध क्षमा कीजिये। वह मूढ़ है, आपके प्रभाव को नहीं जानती। आप उस पर प्रसन्न होइये, यदि मुझमें आपकी भक्ति से उत्पन्न हुआ कुछ भी पुण्य है तो उससे मेरी माता आपकी दया प्राप्त करे।'

इस प्रकार भगवान शंकर को बार-बार प्रार्थना करके उनके चरणों में मस्तक झुकाकर सूर्यास्त के समय वह बालक शिवालय से बाहर निकला और उसने अपने निवासस्थान को देखा। वह इन्द्रनगर के समान शोभा पा रहा था। वहाँ सब कुछ तत्काल सुवर्णमय होकर विचित्र वैभव से प्रकाशित होने लगा। भवन के भीतर प्रवेश करके बालक ने देखा कि उसकी माँ बहुमूल्य रत्नमय पलंग पर बिछी हुई श्वेत रंग की शय्या पर निर्भय होकर सो रही है। उसने माता को जगाया। ग्वालिन बड़े वेग से उठी और अपने को, अपने पुत्र को तथा अपने घर को भी अपूर्व रूप में देखकर आनंद से विह्वल हो गयी।

पुत्र के मुख से गिरिजापति शंकर की इस दिव्य लीला को सुनकर ग्वालिन ने राजा को सूचना दी, जो निरन्तर भगवान शिव के भजन में लगे रहते थे। राजा अपना नियम पूरा करके रात में सहसा वहाँ आये और ग्वालिन के पुत्र का वह प्रभाव, जो शंकरजी के संतोष से प्रकट हुआ था, देखा। स्वर्णमय शिवमंदिर, रत्नमय शिवलिंग तथा सुन्दर मणि-माणिक्यों से जगमगाता हुआ ग्वालिन का महल देखकर राजा चन्द्रसेन पुरोहित और मंत्रियों के साथ दो घड़ी तक आश्चर्यचकित हो आनंद में डूबे रहे। तत्पश्चात् उन्होंने प्रेम के आँसू बहाते हुए ग्वालिन के उस बालक को हृदय से लगा लिया। भगवान शिव के इस अद्‌भुत माहात्म्य की चर्चा समस्त पुरवासियों में बड़े वेग से फैल गयी।

प्रातःकाल दूतों के मुख से यह परम अद्‌भुत समाचार सुनकर, युद्ध के लिए आये हुए और नगर को चारों ओर से घेरकर खड़े हुए राजा चकित हुए, उनके मन से वैरभाव निकल गया। उन्होंने सहसा हथियार डाल दिये और महाराज चन्द्रसेन की आज्ञा से नगर में प्रवेश किया। उस रमणीय नगरी में प्रवेश करके भगवान महाकाल को प्रणाम करने के पश्चात् सब राजा उस ग्वालिन के घर पर आये। वहाँ राजा चन्द्रसेन ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। वे बहुमूल्य आसनों पर बैठे और विस्मित एवं आनंदित हुए। गोप-बालक पर कृपा करने के लिए स्वतः प्रकट हुए शिवालय और शिवलिंग के दर्शन करके सब राजाओं ने भगवान शिव को अपनी उत्तम बुद्धि समर्पित की, उनमें भक्तिपूर्वक मन लगाया। कैसी है शिवभक्ति ! जिसके प्रभाव से वैर प्रेम में, लोभ उदारता में और अहंकार नम्रता में बदला। मुसीबत आनंद के महासागर में बदली। लोभ, विकार छूटकर चित्त में भक्ति, प्रेम और उदारता का उदय हुआ।

उसी समय सब देवताओं से पूजित परम तेजस्वी वानरराज हनुमानजी वहाँ प्रकट हुए। उनके आते ही सब राजाओं ने बड़े वेग से उठकर भक्तिभाव से विनीत हो उन्हें नमस्कार किया। तब हनुमानजी ने कहा : 'राजाओ ! भगवान शिव की पूजा के सिवा देहधारियों के लिए दूसरी कोई गति नहीं है। गोपवंश की कीर्ति बढ़ानेवाला यह बालक संसार में सबसे अधिक पुण्यात्मा है। इसकी वंश-परम्परा में आठवीं पीढ़ी में महायशस्वी नंद उत्पन्न होंगे, जिनके यहाँ साक्षात् भगवान नारायण उनके पुत्ररूप में प्रकट हो श्रीकृष्ण नाम से प्रसिद्ध होंगे। आज से यह गोपालनंदन संसार में 'श्रीकर' नाम से विख्यात होगा।'

अंजनीनंदन हनुमानजी उस गोप बालक को शिवोपासना के आचार-व्यवहार का उपदेश देकर अंतर्धान हो गये। वे सब राजा बड़े हर्षित हुए और महाराज चन्द्रसेन की आज्ञा लेकर जैसे आये थे, वैसे ही लौट गये। महातेजस्वी श्रीकर भी हनुमानजी का उपदेश पाकर धर्मज्ञ ब्राह्मणों के साथ शंकरजी की आराधना करने लगा। भक्त श्रीकर गोप तथा राजा चन्द्रसेन दोनों ने भक्तिपूर्वक शिव की आराधना करके अंत में परम पद प्राप्त किया। इस माया में मायापति के संकल्प से सब कुछ संभव है। जो करने में समर्थ, न करने में समर्थ, अन्यथा करने में समर्थ है, जिसे नन्हा, अनपढ़ ग्वाल भी प्रीतिपूर्वक भजकर प्राप्त कर सकता है, उस अनन्य की करुणा-कृपा और प्रसाद कोई भी पा सकता है।



भगवान शिव के नाम की महिमा

महर्षि लोमशजी नैमिषारण्य तीर्थ में सौनकादि ऋषियों को नाम की महिमा बताते हुए कहते हैं :

हरे हरेति वै नाम्ना शम्भोश्चक्रधरस्य च।
रक्षिता बहवो मर्त्याः शिवेन परमात्मना ॥

'हे हरे ! और हे हर ! इस प्रकार भगवान शिव और विष्णु के नाम लेने से परमात्मा शिव ने बहुतेरे मनुष्यों की रक्षा की है।'

(स्कन्द पुराण, माहे.खं.-केदार.खं. : ५.१२)

ते धन्यास्ते महात्मानः कृतकृत्यास्त एव हि।
द्व्यक्षरं नाम येषां वै जिह्वाग्रे संस्थितं सदा ॥
शिव इत्यक्षरं नाम यैरुदीरितमद्य वै।
ते वै मनुष्यरूपेण रुद्राः स्युर्नात्र संशयः ॥

'जिनकी जिह्वा के अग्रभाग पर सदा भगवान शंकर का दो अक्षरोंवाला नाम (शिव) विराजमान रहता है वे धन्य हैं, वे महात्मा पुरुष हैं तथा वे ही कृतकृत्य हैं। आज भी जिन्होंने 'शिव' इस अविनाशी नाम का उच्चारण किया है, वे निश्चय ही मनुष्यरूप में रुद्र हैं - इसमें संशय नहीं है।'

(स्कन्द पुराण, माहे. खं.-केदार खं. : २७.२२,२३)

मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री उमा भारती के उद्‌गार

(भोपाल, दिनांक : ६ जुलाई २००३)



...तो मैं इन्द्रासन भी ठुकरा दूँगी। बापू को प्रणाम!

पूज्य बापूजी तथा यहाँ उपस्थित सभी बहनो एवं भाइयो, मुझे सत्संग में आने का मौका पहली बार मिला है। मैंने पूज्य बापू का फोटो देखा था। एकाध बार कभी टी.वी. चैनल चालू किया तो उसमें भी देखा। ऐसा मौका कभी नहीं आया जब आमने-सामने बात होती और वह इसलिए नहीं आया क्योंकि मैंने तय किया हुआ था कि पूज्य बापूजी के पास तभी जाऊँगी जब बापू चाहेंगे, क्योंकि जब तक संत नहीं चाहते तब तक आप उनके पास पहुँच भी नहीं सकते। आप कोशिश भी करेंगे और वहाँ पहुँच भी जायेंगे तो भी मिलना और नहीं मिलना बराबर हो जायेगा। जब वे तय करें कि आप उनसे मिलो तभी आप उनसे मिल सकते हैं और इसलिए आज का दिन वह दिन है जब मुझे बापू के दर्शन करने का मौका मिला है और उनसे एक अद्‌भुत बात मुझे और आप सबको सुनने को मिली है, वह है प्रेम की बात। इस सृष्टि का जो मूल तत्त्व है, वह है प्रेम। यह प्रेम नाम का तत्त्व यदि न हो तो सृष्टि नष्ट हो जायेगी। लेकिन संसार में कोई प्रेम करना नहीं जानता, या तो भगवान प्यार करना जानते हैं या संत प्यार करना जानते हैं। जिसको संसारी लोग अपनी भाषा में प्रेम कहते हैं, उसमें तो कहीं-न-कहीं स्वार्थ जुड़ा होता है लेकिन भगवान, संत और गुरु का प्रेम ऐसा होता है जिसको हम सचमुच प्रेम की परिभाषा में बाँध सकते हैं।

मैं यह कह सकती हूँ कि साधु-संतों को देश की सीमाएँ नहीं बाँधतीं। बापू को याद आ जायेगा कि एक सिंधु नदी बहती है। वह कैलाश मानसरोवर के चरणों से निकलती है। चाईना के बॉर्डर से और जम्मू कश्मीर के लेह लद्दाख के बोर्डर से गुजरती हुई पाकिस्तान चली जाती है। जैसे नदियों की धाराएँ देश और जाति की सीमाओं में नहीं बँधतीं, उसी प्रकार परमात्मा का प्रेम और संतों का आशीर्वाद भी कभी देश, जाति और संप्रदाय की सीमाओं में नहीं बँधता। जैसे सिंधु नदी का कोई देश नहीं है, वह तीन-चार देशों में से बह रही है, वैसे ही संत का भी कोई देश नहीं होता। लेकिन फिर भी एक देश नाम की चीज होती है, देश की सीमाएँ नाम की चीज होती है और अपने प्रेम की व्यापकता को बनाये रखते हुए भी जिस विशिष्ट देश में देह जन्मी हो, मैं यह कह सकती हूँ कि संत तो भारत की भूमि पर ही जन्मते हैं और जो बाहर जन्मते हैं वे भी कभी-न-कभी किसी-न-किसी बहाने भारत में आते जरूर हैं या उनके साथी-सहयोगी भारत में आते जरूर हैं। यह विशेषता तो भारत की ही है।

आज झूठ, पाप और पाखंड इतना बढ़ गया है कि कई बार घबराहट होने लगती है कि ऐसे में रहेंगे कैसे ? फिर अंत में एक बात याद आ जाती है कि एक आदमी ने सोचा कि शहर बहुत गंदा हो गया है, इसलिए मैं जंगल में जाऊँगा। जंगल में नदी किनारे गया, मछलियाँ दिखीं तो बोला : ''अरे, यह तो नदी भी गंदी हो गयी है।'' फिर वह पेड़ के नीचे जाकर बैठा। वहाँ चिड़िया ने उसके ऊपर बीट कर दी तो कहने लगा : ''अरे, यहाँ तो पेड़ के नीचे भी गंदगी है।'' फिर अंत में वह एक साधु की शरण गया और बोला : ''महाराज ! साफ जगह कहाँ मिलेगी ?'' तब साधु ने उससे कहा : ''गंदगी तुम्हारे मन में है, इसलिए तुम्हें वह हर जगह दिखती है। तुम तय कर लो कि जहाँ भी तुम बैठोगे, वहाँ शुद्ध मन से भगवान को याद करोगे तो वह जगह भी शुद्ध हो जायेगी।''

काल की गणना के अनुसार यह कलियुग चल रहा है, इसीलिए हृदय की निष्कपटता, निःस्वार्थ प्रेम, त्याग और तपस्या का क्षरण (क्षय) होने लगा है लेकिन फिर भी धरती अगर टिकी है और मैं यह सच बोल रही हूँ, बापू की चमचागिरी नहीं कर रही हूँ, मैं सच बोल रही हूँ कि धरती तो इसलिए टिकी है बापू! क्योंकि आप जैसे संत भारतभूमि पर विचरण करते हैं।

बापू की कथा में ही मैंने यह विशेषता देखी है कि गरीब और अमीर, दोनों को अमृत के घूँट एक जैसे पीने को मिलते हैं। यहाँ गाँवों के गरीब लोग भी आते हैं और बड़े-बड़े धनाढ्य, लक्ष्मी जिनके घर की परीक्रमा करती है, ऐसे लोग भी आते हैं। यहाँ कोई भेदभाव नहीं है और

यह भी मैं बापू से कहूँ कि ये चीजें मैं बहुत दिनों से अपनी डायरी में नोट कर रही थी कि बापू के यहाँ ही यह खूबी देखने को मिलती है कि यहाँ पद-प्रतिष्ठा और पैसे के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होता। यहाँ सबको बापू का सत्संग सुनने को मिलता है, दर्शन करने को मिलते हैं और जो व्यवस्था बनानेवाले लोग हैं, वे व्यवस्था बनाते समय कोई भेदभाव नहीं करते।

मैं राजनीति में हूँ पर राजनीतिज्ञ नहीं हूँ, मैं तो बापू की बालिका हूँ और बापू को यह पता है। बापू का और मेरा सम्बन्ध जन्म-जन्मांतर का है। इसलिए मैं अभी जो बात बोलूँगी, वह एकदम ऐसे ही बोलूँगी जैसे एक बालक बोलता है।

अब मैं वह वाक्य बोलूँगी यहाँ पर, जो एक छोटी-सी लड़की ने मेरी डायरी में लिखा था और उसके साथ अपनी बात खत्म करूँगी।

उसने लिखा था : ''आई लव यू नॉट फॉर वॉट यू आर बट फॉर वॉट आई एम वेन आई एम विथ यू।''

गुरु के बारे में यह कभी नहीं देखना चाहिए कि गुरु को क्या आता है और क्या नहीं आता, गुरु क्या करते हैं और क्या नहीं करते क्योंकि अगर हम उनकी थाह लेने के लिए निकलें तो हम ही गुरु हो गये। इसलिए यह कभी नहीं देखना चाहिए कि गुरु कैसे कपड़े पहनते हैं, कैसा भोजन करते हैं, कैसी वाणी बोलते हैं ? अरे, यह ऐसा क्यों कर रहे हैं ? मैं आपको सच बताती हूँ कि एक ही चीज को देखिये कि जब हम उनके पास बैठे थे, तब हम कैसे हो गये थे ? और तब हम जो हो जाते हैं वही हमारी उपलब्धि है, गुरु की थाह तो ली नहीं जा सकती। इसलिए यहाँ मैं बापू को भी अंग्रेजी में यही बोलूँगी। मैं बोलूँगी :

''बापू आई लव यू नॉट फॉर वॉट यू आर बट फॉर वॉट आई एम वेन आई एम विथ यू।

अर्थात् बापू ! मैं आपको बहुत प्यार करती हूँ इसलिए नहीं कि आप क्या हो, बल्कि इसलिए कि मैं क्या हो गयी थी जब मैं आपके पास बैठी थी।

मैं आपके पास बैठकर जो हो गयी थी न, उसके सामने तो मैं इन्द्रासन भी ठुकरा दूँगी। बापू को प्रणाम, आप सबको प्रणाम।''

वसंत ऋतु में आहार

वसंत ऋतु शीत व ग्रीष्म ऋतु का संधिकाल होता है। वसंत ऋतु में रक्तसंचार तीव्र हो जाता है, जिससे शरीर में स्फूर्ति रहती है। इस ऋतु में आयुर्वेद ने खान-पान में संयम की बात कहकर व्यक्ति और समाज की निरोगता का ध्यान रखा है।

वसंते निचितः श्लेष्मा दिनकृभ्दाभिरीरितः।

'चरक संहिता' के अनुसार हेमंत ऋतु में संचित हुआ कफ वसंत ऋतु में सूर्य की किरणों के प्रभाव से पिघलकर कुपित होता है, जिससे वसंतकाल में खाँसी, सर्दी-जुकाम, टॉन्सिल्स में सूजन, गले में खराश, शरीर में सुस्ती व भारीपन आदि की शिकायत होने की सम्भावना रहती है।

इस ऋतु में लाई, भूने हुए चने, ताजी हल्दी, ताजी मूली, अदरक, पुरानी जौ, पुराने गेहूँ की चीजें खाने के लिए कहा गया है। इसके अलावा मूँग बनाकर खाना भी उत्तम है। नागरमोथ अथवा सोंठ डालकर उबाला हुआ पानी पीने से कफ का नाश होता है।

वसंत ऋतु में सुबह खाली पेट हरड़े का चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से लाभ होता है। इस ऋतु में कड़वे नीम में नयी कोंपलें फूटती हैं। नीम की १५-२० कोंपलें २-३ काली मिर्च के साथ खूब चबा-चबाकर खानी चाहिए। यह प्रयोग १५-२० दिन करने से वर्ष भर चर्मरोग, रक्तविकार और ज्वर आदि रोगों से रक्षा करने की प्रतिरोधक शक्ति पैदा होती है। इसके अलावा कड़वे नीम के फूलों का रस ७ से १५ दिन तक पीने से त्वचा के रोग और मलेरिया जैसे ज्वर से भी बचाव होता है।

आचार्य चरक के अनुसार इस ऋतु में पचने में भारी, चिकनाईवाले, खट्टे और मीठे पदार्थों का सेवन वर्जित है। ठंडे पेय, आइसक्रीम, बर्फ के गोले, चॉकलेट, मैदे की चीजें, खमीरवाली चीजें, दही आदि पदार्थ बिल्कुल त्याग देने चाहिए। इस ऋतु में कफ को कुपित करनेवाले पौष्टिक और गरिष्ठ पदार्थों की मात्रा धीरे-धीरे कम करते हुए गर्मी बढ़ते ही बंद करके सादा, सुपाच्य आहार लेना शुरू कर देना चाहिए। कटु, तिक्त, कषायरस-प्रधान द्रव्यों का सेवन करना हितकारी है।

धार्मिक ग्रंथों के वर्णनानुसार चैत्र मास के दौरान 'अलोने व्रत' (बिना नमक का भोजन) करने से रोग-प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है तथा त्वचा के रोग, हृदय के रोग, उच्च रक्तचाप (हाई बी. पी.), गुर्दे (किडनी) आदि के रोग नहीं होते।

महात्मा गौरीनाथ का धर्मांतरण के विरुद्ध उग्र आंदोलन

सोलहवीं शताब्दी में गोवा में पुर्तगालियों का शासन था। वे गोवा का आर्थिक शोषण तो कर ही रहे थे, पर उससे भयानक बात यह थी कि वे गोवा से हिन्दू धर्म और संस्कृति को नष्ट कर वहाँ की जनता का ईसाईकरण कर रहे थे। हिन्दुओं के सभी धार्मिक कृत्य लगभग प्रतिबंधित किये जा रहे थे और मंदिर गिराये जा रहे थे। मूर्तियाँ तोड़कर रास्तों पर फेंकी जा रही थीं। आये दिन चारों तरफ हिन्दुओं पर गोलियों की बौछार होती थी। गायों का निर्दयतापूर्वक कत्ल किया जा रहा था। संगीनों (अस्त्र) की नोक पर हिन्दुओं को ईसाई बनाया जा रहा था। बहुसंख्यक होते हुए भी गोवा का हिन्दू समाज अपने-आपको हताश, असहाय अनुभव कर रहा था। अगर कोई हिन्दू धार्मिक कृत्य करता नजर आता तो उसे तरह-तरह से सताया जाता। उनमें जो दृढ़निश्चयी होते थे उन्हें मार दिया जाता और कमजोर मनवाले उत्पीड़न से छुटकारा पाने के लिए ईसाई बन जाते।

ईसाइयों के अत्याचारों से जनता आतंकित हो उठी। उनकी क्रूरता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। ऐसे वातावरण को देखकर कनारा गाँव के एक महात्मा गौरीनाथ सिहर उठे। जब उन्होंने ईसाइयों के बर्बर अत्याचारों और जनता की विवशता को देखा तो उनका हृदय रो पड़ा। वे इस आतंक से लोहा लेने के लिए आगे आये। वे घर-घर जाते, जन-जन से मिलते और यही समझाते कि यदि संगठित रूप से अत्याचार-अनाचार का प्रतिकार किया जाय तो शक्तिशाली बर्बरता को भी परास्त किया जा सकता है। लोगों को संगठित करके महात्मा गौरीनाथ जगह-जगह क्रांति पैदा कर रहे थे। जिससे जनता के अन्दर एक नवीन साहस जगने लगा।

उसी समय ईसाइयों के बर्बर अत्याचार की एक और घटना घटी। एक मंदिर के पुजारी को खंभे से बाँधकर सबके सामने उसके घर की स्त्रियों से अमानुषिक व्यवहार किया गया। इस घटना से जनता का खून खौल उठा। जबरन बनाये गये ईसाइयों ने गले से क्रॉस चिह्न निकाल फेंके और बाइबिल के स्थान पर पुनः गीता और रामायण की स्थापना की गयी। ईसाइयों के प्रति जनता में घोर घृणा पैदा हो गयी। तोड़े गये मंदिरों का निर्माण-कार्य उसी समय आरम्भ हो गया। इस प्रकार महात्मा गौरीनाथ ने क्रांति की एक लहर पैदा कर दी। पुर्तगाली शासन के पैरों से जमीन खिसकने लगी। जगह-जगह तोड़-फोड़ की घटनाएँ होने लगीं। अब ईसाइयों को लगा कि जाग्रत हो चुकी जनता उन्हें वहाँ से खदेड़कर ही दम लेगी।

ईसाई यह जानने को बेचैन थे कि जो आतंकित जनता हमारे सामने मुँह खोलने का साहस नहीं कर सकती थी, उसमें इस प्रकार विद्रोह के बीज डालनेवाला कौन है ? बहुत खोजबीन के बाद उन्हें पता चला कि इस आंदोलन का नेतृत्व करनेवाले महात्मा गौरीनाथ हैं। उन्होंने लोगों को संगठित कर विद्रोह की आग पैदा कर दी है। महात्मा गौरीनाथ को पकड़वाने के लिए बड़े-बड़े इनाम रखे गये किंतु वे कहीं पकड़ने में न आते थे, क्योंकि जनता उन्हें बेहद प्यार करती थी। वे छुपे-छुपे ही आंदोलन का नेतृत्व करते और योजनानुसार ईसाइयों के क्रूर मनसूबे मिट्टी में मिला देते। सरकार परेशान थी कि न तो कोई उनका पता बताता है और न ही सैनिक उन्हें ढूँढ़ पाते हैं।

लेकिन एक ऐसा दुर्भाग्य का समय आया कि पुलिस द्वारा उन्हें पकड़ लिया गया और जेल में बंद कर दिया गया। पहले तो उन्हें बहुत प्रलोभन दिये गये कि वे इस आंदोलन को बंद कर दें और ईसाई धर्म स्वीकार कर लें तो उन्हें भारी इनाम देकर बाइज्जत बरी कर दिया जायेगा, किंतु जब वे तैयार न हुए तो कहा गया कि वे अपने साथियों के नाम ही बता दें, जिन्होंने इस आंदोलन में उनका साथ दिया। इस पर गौरीनाथ बोले : 'मैं ही उन सबका प्रतिनिधि हूँ। उन सबका दण्ड मैं अकेले ही सहने को तैयार हूँ।'

जब ईसाइयों ने देखा कि उनके सभी प्रयास निष्फल हो रहे हैं तो उन्होंने गौरीनाथ को निर्दयतापूर्वक सताना शुरू किया। उन्हें हंटरों से पीटा गया जिससे उनके शरीर पर अनेकों घाव हो गये। अँधेरी, गीली, दुर्गन्धवाली कोठरी में उन्हें कई दिनों तक भूखा-प्यासा रखा गया। इस पर भी उन्होंने ईसाइयों की शर्तों को स्वीकार नहीं किया। एक दिन क्रूर सैनिकों ने उन्हें जेल से बाहर निकाला और गंदे-फटे चिथड़े पहनाकर, गले में गंदे-फटे जूतों की माला डालकर पीटते हुए चर्च के

सामने ले आये और उनसे फिर ईसाई बनने के लिए कहा। इस पर उन्होंने इतना ही कहा : 'न मुझे लोभ अपने पथ से विचलित कर सकता है और न ही अत्याचार डिगा सकते हैं।'

इतना सुनते ही सैनिकों ने चर्च के सामने बड़ा-सा गड्ढा खोदकर उन्हें कमर तक गाड़ दिया और एक बार पुनः उनसे ईसाई बनने के लिए कहा। इस पर उन्होंने कहा : 'धर्म के प्रति सच्ची निष्ठा की इस अग्नि-परीक्षा में मुझे उत्तीर्ण होने दीजिये। आप जो करना चाहें, करें। मुझसे निष्ठा से विचलित होने की आशा मत कीजिये।'

अब महात्मा गौरीनाथ पर खूँखार शिकारी कुत्ते छोड़े गये, जो उनकी बोटियाँ नोचने लगे किंतु उनके चेहरे पर अंत तक शांति और धर्मनिष्ठा की झलक दिखायी देती रही। जब गोवा की जनता ने महात्मा गौरीनाथ के मृत्युदण्ड का समाचार सुना तो उसका खून खौलने लगा। धर्मांतरण के विरुद्ध आंदोलन ने जोर पकड़ा और ईसाइयों को सब ओर अपना विनाश और काल ही खड़ा दिखायी देने लगा। छापामार विद्रोहियों ने उनकी करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट कर दी और सैकड़ों को मौत के घाट उतार दिया। महात्मा गौरीनाथ की जलायी हुई क्रांति की आग कभी धीमी तो कभी तीव्र गति से जलती ही रही। समय तो लगा पर यह ज्वाला तभी शांत हुई जब गोवा की भूमि ईसाईकरण के सहायक पुर्तगालियों के क्रूर शासन से मुक्त हो गयी।

ईसाई विद्वान जान पाल ने पत्र लिखकर कहा -

चर्च वनवासियों का मतांतरण बंद करे

विख्यात ईसाई विद्वान और मानव-विज्ञानी श्री जान पाल के द्वारा लिखा एक पत्र तिरुवनंतपुरम् (केरल) से प्रकाशित होनेवाले 'द न्यू इण्डियन एक्सप्रेस' के 'सम्पादक को पत्र' स्तम्भ में छपा था।

प्रस्तुत है उसके कुछ अंश :

कई पीढ़ियों से वनवासियों पर एकछत्र प्रभुत्व जमा चुका चर्च, उनका अपने विरोधियों के विरुद्ध एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उपयोग करता है और जो (दल) चर्च से सहानुभूति रखता है, उसके लिए वनवासियों को 'वोट बैंक' के रूप में सुलभ कराता है।...

...राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से पृथक् हो जाने का भय रखनेवाले गैर मतांतरित वनवासी, अपने प्रति मतांतरितों में रोपी गयी नकारात्मक सोच के चलते हिंसा और हत्या पर उतर आते हैं।...

...मैं एक ईसाई हूँ, साथ ही एक मानव-विज्ञानी भी। मैंने कुछ समय के लिए उड़ीसा के वनवासियों के बीच काम किया था। मुझे मालूम है कि वहाँ क्या हो रहा है। मेरा मानना है कि ईसाई मिशनरियों को अपनी मतांतरण की गतिविधियों पर रोक लगानी चाहिए। वनवासियों के ईसाईकरण की इन गतिविधियों के लिए आर्थिक सहयोग दे रहे सम्पूर्ण केरल के ईसाइयों को इन हरकतों के लिए धन देना बंद करना चाहिए। मैं विभिन्न चर्चों से भी अपील करूँगा कि कम-से-कम वनवासियों की पीड़ा से उपजी प्रतिक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए वनवासियों को ईसाई बनाना छोड़ दें। वनवासियों की पहचान बनी रहने दें।... - 'सेवा समर्पण' पत्रिका, माह : अक्टूबर १९९९.

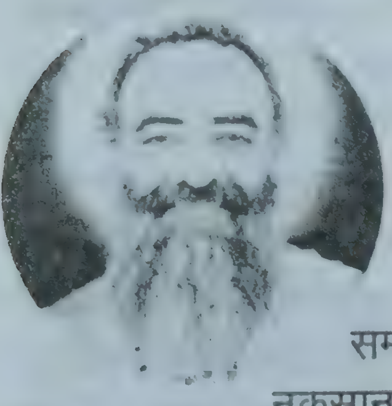


शिवरात्रि पर 'बं' बीजमंत्र के जप का प्रभाव



शिवरात्रि के दिन देशी घी का दिया जलाकर 'बं' बीजमंत्र का सवा लाख जप करना बहुत हितकारी है। यह मंत्र शुद्ध, सात्त्विक भावनाओं को सफल करने में बड़ा सहयोग देगा। हो सके तो एकांत में शिवजी का विधिवत् पूजन करें या मानसिक पूजन करें। सवा लाख बार 'बं' का उच्चारण भिन्न-भिन्न सफलताएँ प्राप्त करने में मदद करेगा। जोड़ों का दर्द, वमन, कफ एवं वायुजन्य बीमारियों, डायबिटीज आदि में यह लाभ पहुँचाता है। बीजमंत्र स्थूल शरीर को तो फायदा पहुँचाते ही हैं, साथ ही सूक्ष्म और कारण शरीर पर भी अपना दिव्य प्रभाव डालते हैं।

पूज्यश्री की तस्वीर से मिली प्रेरणा



सर्वसमर्थ परम पूज्य श्री बापूजी के चरणकमलों में मेरा कोटि-कोटि नमन...

१९८४ के भूकंप से सम्पूर्ण उत्तर बिहार में भारी नुकसान हुआ था, जिसकी चपेट में हमारा घर भी था। परिस्थितिवश मुझे नौवीं कक्षा में ही पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी। किसी मित्र की सलाह से मैं नौकरी ढूँढ़ने के लिए दिल्ली गया लेकिन वहाँ भी निराशा ही हाथ लगी। मैं दो दिन से भूखा तो था ही, ऊपर से नौकरी की चिंता। अतः **आत्महत्या का विचार करके** रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा।

रानीबाग बाजार में एक दुकान पर पूज्यश्री का सत्साहित्य, कैसेट्स आदि रखा हुआ था एवं पूज्यश्री की बड़े आकार की तस्वीर भी टँगी थी। पूज्यश्री की हँसमुख एवं आशीर्वाद की मुद्रावाली उस तस्वीर पर मेरी नजर पड़ी तो १० मिनट तक मैं वहीं सड़क पर से ही खड़े-खड़े उसे देखता रहा।

उस वक्त न जाने मुझे क्या मिल गया ! मैं काम भले मजदूरी का ही करता हूँ लेकिन तबसे लेकर आज तक मेरे चित्त में बड़ी प्रसन्नता बनी हुई है।

न जाने मेरी जिंदगी की क्या दशा होती अगर पूज्य बापूजी की **'युवाधन सुरक्षा'**, **'ईश्वर की ओर'**, **'निश्चिन्त जीवन'** पुस्तकें और **'ऋषि प्रसाद'** पत्रिका हाथ न लगती ! पूज्यश्री की तस्वीर से मिली प्रेरणा एवं उनके सत्साहित्य ने मेरी डूबती नैया को मानों, मझधार से बचा लिया।

धनभागी हैं साहित्य की सेवा करनेवाले ! जिन्होंने मुझे आत्महत्या के पाप से बचाया।

- महेश शाह

नारायणपुर, डुमरा, जि. सीतामढ़ी (बिहार).

अभी ऐसे कैमरों का आविष्कार हो चुका है जो व्यक्ति की तस्वीर के साथ आभा भी दिखाते हैं। इसे 'किरलियन फोटोग्राफी' कहते हैं। ऐसी तस्वीर निकालनेवाले लोग आश्रम में आये थे। उन्होंने ५७६ प्रभावशाली व्यक्तियों की तस्वीरें यह जानने हेतु ली थीं कि उनकी आभा किस रंग की है। उन्होंने बताया कि 'हमने ५७६ प्रसिद्ध व्यक्तियों की तस्वीरें ली हैं किंतु बापूजी की आभा तो विशेष प्रभावशाली है।'

वंशेसदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु।

आपके कुल में सदैव हरिभक्ति बनी रहे।

वर-वधू चाहिए

स्वकुल (साळी) जाति, दक्ष गोत्र, रंग गोरा, २६/५'-९'', शिक्षा- बी.कॉम., कन्स्ट्रक्शन कम्पनी में मार्केटिंग एक्सीक्यूटिव, दीक्षा जुलाई १९९९ अमदावाद में, पूना (महा.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित सुयोग्य, सजातीय कन्या चाहिए। कन्या द्वारा तीन ध्यान योग शिविर भरे हों तो प्राधान्य। संपर्क : लो.क.से. बॉक्स क्र. M-1316

फूलमाली जाति, रंग गोरा, २४/५'-३'', शिक्षा- एम.ए., ब्यूटी पार्लर में नौकरी, दीक्षा २००१ सूरत में, पूना (महा.) निवासी कन्या हेतु पूज्यश्री से दीक्षित सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए। संपर्क : लो.क.से. बॉक्स क्र. M-1317

हिन्दू जमींदार मीणा जाति, गौसिंहा गोत्र, रंग गोरा, २०/५'-५'', शिक्षा- बी.एससी., दीक्षा २००१ बड़ौदा में, पिता रेलवे में सेवारत, बड़ौदा (गुज.) निवासी कन्या हेतु पूज्यश्री से दीक्षित सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए। संपर्क : लो.क.से. बॉक्स क्र. M-1313

नाई जाति, गोला गोत्र, रंग गोरा, २२/५'-१'', शिक्षा- एम.ए., पी एच.डी. में अध्ययनरत, दीक्षा २००१ बरेली (उ.प्र.) में, पीलीभीत (उ.प्र.) निवासी कन्या हेतु पूज्यश्री से दीक्षित सुयोग्य, सजातीय, सेवारत वर चाहिए। बरेली, लखनऊ, दिल्ली या ग्वालियर निवासी को प्राथमिकता। संपर्क : लो.क.से. बॉक्स क्र. M-1318

अहीर जाति आदधर्मी, रंग गोरा, २९/५'-६'', शिक्षा- बी.ए.एम.एस., पिता रिटायर्ड आई.जी.पी., जयपुर (राज.) निवासी मांगलिक कन्या हेतु पूज्यश्री से दीक्षित सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए। संपर्क : लो.क.से. बॉक्स क्र. M-1321

गौड ब्राह्मण जाति, गालब गोत्र, रंग गोरा, २३/५'-२'', शिक्षा- बी.ए., दीक्षा १९९७ चंडीगढ़ में, पिता का निजि व्यवसाय, अम्बाला (हरियाणा) निवासी कन्या हेतु पूज्यश्री से दीक्षित सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए। हरियाणा-पंजाब निवासी को प्राथमिकता। संपर्क : लो.क.से. बॉक्स क्र. M-1315

विसेन राजपूत जाति, वत्स गोत्र, रंग गोरा, २८/५'-३'', शिक्षा- एम.ए.बी.एड., एम.बी.ए. (एच.आर.डी.), एयर फोर्स स्कूल में परमानेंट पी.आर.टी. अध्यापिका, दीक्षा २००१ महाकुंभ प्रयाग में, पिता सेवानिवृत्त ऑनरेरी फ्लाइंग अफसर, बमरौली (इलाहाबाद) उ.प्र. निवासी मांगलिक कन्या हेतु पूज्यश्री से दीक्षित सरकारी नौकरीवाला सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क : लो.क.से. बॉक्स क्र. M-1312

मैथिल ब्राह्मण, वत्स गोत्र, रंग- गोरा, २८/५'-५'', शिक्षा- एम.ए., पिता बैंक में वरिष्ठ प्रबंधक, दीक्षा १९९८ हिसार में, मधुबनी (बिहार) निवासी कन्या हेतु पूज्यश्री से दीक्षित सुयोग्य, सजातीय, सेवारत वर चाहिए। संपर्क : लो.क.से. बॉक्स क्र. M-1320

विभिन्न समितियों द्वारा किये जा रहे दैवी कार्यों की एक झलक

युवाधन सुरक्षा अभियान

अनूपगढ़, जि. श्रीगंगानगर (राज.) : स्थानीय विद्यालयों के ९वीं से १२वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों में 'युवाधन सुरक्षा' पुस्तक तथा सुवाक्यों से युक्त नोटबुकों का निःशुल्क वितरण किया गया।

नोटबुकों का निःशुल्क वितरण

चुरू (राज.) : महात्मा ज्योतिराव शिक्षण संस्थान, राजीव गाँधी पाठशाला - रतननगर, उच्च प्राथमिक टैनी किड्स स्कूल तथा एस.के. आर्ट मेमोरियल पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों में नोटबुकों का निःशुल्क वितरण किया गया।

व्यसनमुक्ति अभियान

जामनेर, जि. जलगाँव (महा.) : जनसामान्य में 'नशे से सावधान' पुस्तक वितरित की गयी। नगर में हरिनाम संकीर्तन यात्रा निकाली गयी तथा सत्साहित्य बाँटा गया।

जेल में सत्संग

उदयपुर (राज.) : केन्द्रीय कारागार में पूज्यश्री के विडियो सत्संग व भजन-कीर्तन आदि का कार्यक्रम किया गया। ४० कैदियों ने पूज्यश्री की तस्वीर के समक्ष व्यसन त्यागने का संकल्प किया। कैदियों में निःशुल्क सत्साहित्य भी बाँटा गया। साथ ही झाड़ोल गाँव में हरिनाम संकीर्तन यात्रा निकाली गयी। छिपोका आकोला गाँव में विडियो प्रोजेक्टर पर पूज्यश्री का सत्संग दिखलाया गया। अनेक ग्रामीणों ने व्यसनमुक्त होने का संकल्प किया।

बाल संस्कार केन्द्र

जोधपुर (राज.) : बालिका माध्यमिक विद्यालय में एक दिवसीय सुसंस्कार सिंचन कार्यक्रम हुआ। छात्राओं को एकाग्रता व स्मरणशक्ति बढ़ाने के प्रयोग, प्राणायाम तथा मुद्राओं को प्रायोगिक तौर पर करके दिखाया गया तथा जीवन को उन्नत व चरित्रवान बनाने की सीख दी गयी। साँईनाथ पब्लिक स्कूल में बालकों के लिए विडियो सत्संग, भजन, कीर्तन, ध्यान का कार्यक्रम किया गया। कुष्ठ आश्रम, मण्डोर व मसुरिया में भण्डारे का आयोजन हुआ एवं झुग्गी-झोंपड़ियों व गरीब बस्तियों में फल, वस्त्र तथा मिठाइयाँ बाँटी गयीं। केन्द्रीय कारागृह में कैदियों ने विडियो सत्संग द्वारा पूज्यश्री की जीवनोद्धारक अमृतवाणी का रसपान किया।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर

चेम्बूर, मुंबई (महा.) : 'निःशुल्क नेत्र-परीक्षण व उपचार शिविर' लगाया गया। इसमें 'आदित्य ज्योति नेत्र-परीक्षण संस्थान' के अनुभवी चिकित्सकों ने नेत्र-रोगियों का उपचार किया।

अस्पतालों में फल व सत्साहित्य वितरण

रायबरेली (उ.प्र.) : जिला अस्पताल में रोगियों को फल व प्रसाद दिया गया। कुष्ठ आश्रम, अहिया रामपुर में खाद्य सामग्री का वितरण किया गया। जिला कारागार में निर्धन कैदियों के आश्रितों को वस्त्र दिये गये।

सिरोही (राज.) : अस्पतालों में रोगियों में फल वितरित किये गये।

दरिद्रनारायणों में अनाज-वितरण

आमेट, जि. राजसमंद (राज.) : निर्धन परिवारों में प्रति व्यक्ति अनुसार अनाज, छाछ व प्रसाद वितरित किया गया।

आबू रोड, जि. सिरोही (राज.) : बगेरी के आदिवासी परिवारों में अनाज व वस्त्रों का वितरण किया गया। ग्रामीणों में सत्साहित्य बाँटा गया। कुष्ठ आश्रम में भी अनाज बाँटा गया। मूँगथला में आश्रम की साध्वी बहन के सत्संग के पश्चात् आदिवासियों के लिए भंडारे का आयोजन किया गया।

विविध सेवाकार्य एक नजर में...

बदायूँ (उ.प्र.) : बरेली, फरीदपुर, बबराला, बदायूँ, सहसवान, आगरा आदि समितियों ने सम्मिलित होकर बदायूँ नगर के मुख्य मार्गों से हरिनाम संकीर्तन यात्रा निकाली। गरीबों में कम्बल व वस्त्र बाँटे गये।

होशियारपुर (पंजाब) : वृद्धाश्रम में तथा मानसिक रूप से विकलांग बच्चों में फल वितरित किये गये।

जमशेदपुर (झारखण्ड) : गरीबों में वस्त्रों व मिठाइयों का वितरण किया गया। हुड़ गाँव के आदिवासी परिवारों में अनाज बाँटा गया। निर्धन विद्यार्थियों में नोटबुकों का निःशुल्क वितरण किया गया।

आवश्यक सूचना

संत श्री आसारामजी आश्रम, अमदावाद के दूरभाष क्रमांक बदल गये हैं। नये क्रमांक हैं : २७५०५०१०, २७५०५०११.

आध्यात्मिक ज्ञान प्रतियोगिता - २००३ के परिणाम

संत श्री आसारामजी एजुकेशनल एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा सम्पूर्ण भारत में आयोजित 'आध्यात्मिक ज्ञान प्रतियोगिता' हेतु ३,५६,५०४ विद्यार्थियों के आवेदन पत्र प्राप्त हुए। १७६० केन्द्रों पर आयोजित की गयी इस प्रतियोगिता में ३०,००० से भी अधिक सेवाधारियों ने सेवा प्रदान की। १,२२,४०५ विद्यार्थी सफल हुए जिनके नाम, रोल नं. व ग्रेड आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org पर उपलब्ध हैं। २३०२ विजेताओं को पुरस्कार दिये जा रहे हैं, जिनके रोल नं. इस प्रकार हैं :

1st	15550011	दिपम कन्हैयालाल- सूरजगाँव, डुँगरपुर, (राज.)	(क)
1st	15202352	सुनील कुमार रामविकास- नई दिल्ली	(ख)
1st	15117778	रिचा सतीश- खुराड, मेरठ (उ.प्र.)	(ग)
1st	15326242	विमलेशभाई मनाराम- सिनधरी, बाड़मेर (राज.)	(च)
2nd	15387622	पलक सुरिंदर- जालन्धर, (पंजाब)	(क)
2nd	15268242	मुकेश मायाराम- नई दिल्ली	(ख)
2nd	15197374	ज्योति रामसजीवन- इलाहाबाद, (उ.प्र.)	(ग)
2nd	15489257	संजीव शिवबालक- वाशी, नवीमुंबई (महा.)	(च)
3rd	15155542	एकांश तरसेम- अहमदगढ़, (पंजाब)	(क)
3rd	15256608	गोविंद मेरुभाई- सिदसर, भावनगर (गुज.)	(ख)
3rd	15157726	दिनेश राजवीर सिंह- रोहतक (हरियाणा)	(ग)
3rd	15024589	श्यामेन्दर गजेन्दर सिंह- कोटा, (राज.)	(च)

4TH PRIZE

15027944	15059251	15063036	15071589	15072280	15072282	15113726	15142552	15142703
15155508	15155575	15168849	15172911	15184476	15191204	15193650	15197226	15197932
15214105	15265340	15265342	15269657	15280059	15285083	15290427	15291453	15328271
15352033	15390426	15396804	15400555	15401990	15440430	15545916	15551710	15553702
15577226	15593346	15611500	15639275	15000829	15020715	15024544	15027775	15052962

5TH PRIZE

15000829	15020715	15024544	15027775	15052962	15057535	15066951	15102055	15142632
15146036	15150058	15155348	15161321	15169194	15172848	15187589	15193649	15195118
15196808	15200055	15201066	15221159	15225059	15233447	15237030	15243685	15259127
15277833	15309509	15323145	15325359	15327208	15333709	15338152	15436993	15437601
15447322	15451561	15481526	15519580	15519591	15520106	15521001	15538595	15551900
15571302	15591148	15591149	15612544	15633342	15006309	15009517	15018125	15024543

6TH PRIZE

15006309	15009517	15018125	15024543	15024615	15024622	15036566	15052609	15057518
15059808	15060002	15062298	15062352	15062383	15071518	15071729	15072281	15073179
15075055	15075239	15106757	15108102	15112626	15123811	15124395	15130211	15142504
15157771	15157926	15160659	15161151	15161450	15161863	15165826	15167433	15169384
15171633	15173451	15176751	15180336	15185130	15190033	15197501	15197826	15198563
15200124	15211867	15224688	15228984	15241501	15244202	15246306	15246705	15248255
15249401	15251653	15251701	15254363	15256576	15290303	15291462	15292281	15292573
15293067	15293348	15294489	15310303	15333849	15347790	15347802	15350534	15355484
15363980	15382265	15383010	15384676	15390052	15400107	15400809	15401757	15405832
15412588	15425627	15431698	15459740	15514265	15521128	15521652	15522639	15530262
15548241	15553568	15571686	15586488	15590238	15596614	15604285	15610377	15612558
15637633	15006095	15007504	15013307	15020738	15024593	15024652	15029835	15029855

7TH PRIZE

15006095	15007504	15013307	15020738	15024593	15024652	15029835	15029855	15047529
15061929	15066825	15082586	15090229	15100102	15101161	15102068	15104354	15113727
15119601	15124053	15129361	15132024	15136009	15137880	15142468	15142551	15142875
15146932	15154599	15157770	15168626	15174743	15185141	15187587	15190370	15196037
15197343	15204166	15204602	15213479	15213629	15220274	15224852	15230743	15233479
15245156	15246707	15250638	15253177	15264157	15264826	15264877	15265205	15269347
15280347	15290265	15293027	15293290	15294009	15294487	15294826	15295727	15298544
15310118	15319573	15326659	15326660	15328042	15345460	15361775	15378978	15379579
15381342	15388626	15389002	15390285	15400736	15400745	15401282	15401991	15406103
15414301	15427005	15428503	15433411	15439385	15451098	15459748	15472602	15473905
15488698	15522101	15528681	15531054	15531352	15546377	15547878	15550971	15553558
15574097	15000101	15000169	15000220	15000224	15000548	15000578	15000643	15000692

8TH PRIZE

15000101	15000169	15000220	15000224	15000548	15000578	15000643	15000692	15000709
15000827	15000878	15000919	15001586	15001769	15001801	15001845	15002040	15002078
15002421	15002422	15002622	15002651	15003505	15003516	15004276	15005026	15005027
15005209	15006180	15006182	15006183	15006184	15006218	15006271	15006307	15006317
15006318	15006409	15006752	15007003	15007436	15007702	15008315	15009520	15010062

15010160	15010196	15013425	15017526	15017541	15017803	15018124	15018532	15018728
15019151	15019152	15019305	15019946	15019973	15020001	15020007	15020011	15020019
15020020	15020079	15020105	15020203	15020214	15020253	15020308	15020548	15020674
15020734	15020735	15020741	15020743	15020746	15020747	15021036	15021202	15024583
15024628	15024633	15024654	15024741	15025015	15026152	15027528	15027545	15027549
15027754	15028082	15029076	15029189	15029912	15029944	15030146	15030149	15030155
15031141	15031234	15032112	15032292	15033020	15033353	15033455	15034051	15034310
15035818	15036001	15036578	15036607	15038508	15039078	15039098	15040040	15040097
15040237	15040255	15042591	15045106	15047257	15047275	15047627	15047631	15048522
15049777	15050001	15050004	15050023	15050278	15050414	15050783	15050934	15050945
15051449	15052552	15052607	15052608	15052612	15052692	15052695	15052727	15052765
15052935	15053076	15053220	15053367	15053526	15053743	15054137	15054279	15054320
15054364	15054417	15054448	15054450	15054480	15055004	15055435	15055527	15055728
15056008	15056476	15056804	15057503	15057504	15057534	15057543	15057580	15057589
15057601	15057607	15057627	15057739	15058941	15059061	15059079	15059144	15059175
15059179	15059215	15059242	15059340	15059558	15059754	15060001	15060004	15060022
15061451	15061452	15061551	15061554	15061640	15061729	15061924	15062055	15062330
15062331	15062376	15062389	15062878	15062883	15063003	15063453	15063602	15063857
15064049	15064050	15064402	15064752	15064886	15065591	15066275	15066752	15068033
15068274	15068374	15068787	15069348	15069819	15070002	15070070	15070075	15070353
15070373	15070377	15070485	15070570	15071296	15071520	15071524	15071560	15072304
15072459	15072739	15072964	15072966	15072968	15073189	15073191	15073208	15073491
15073492	15073859	15075051	15075053	15075057	15075072	15075129	15075131	15075381
15075674	15075979	15076020	15076026	15077660	15077889	15079195	15080701	15080764
15081046	15081332	15082540	15082565	15082579	15083215	15083884	15084743	15086273
15089018	15090001	15090009	15090086	15090160	15090209	15090227	15090232	15090235
15090237	15090238	15090240	15090241	15090242	15090243	15090245	15090247	15090248
15090249	15090250	15090252	15090810	15090813	15090821	15091502	15091510	15091530
15091914	15092845	15092940	15093284	15093684	15093977	15094313	15100106	15100116
15101732	15101804	15101807	15102070	15102071	15103395	15103911	15103916	15104287
15104764	15104808	15105044	15105133	15105526	15105556	15105644	15105797	15106772
15107026	15107188	15107826	15108101	15108179	15108308	15109037	15109063	15109227
15112584	15112602	15112610	15112701	15113054	15113219	15113460	15113576	15113778
15113965	15114481	15115202	15115356	15115501	15115518	15115552	15116315	15116831
15117009	15117044	15117171	15117495	15117575	15117735	15117793	15117836	15117837
15117937	15117971	15118182	15118408	15118542	15118931	15118944	15119179	15119306
15119313	15119321	15119383	15119558	15122312	15122429	15122482	15122594	15123605
15123622	15123726	15123732	15123780	15123804	15123807	15123852	15124001	15124017
15124027	15124038	15124373	15124398	15124639	15125577	15125603	15125973	15126003
15126004	15127623	15128209	15128403	15128408	15128776	15129251	15129350	15129546
15129547	15129598	15129854	15130045	15130347	15131968	15131999	15132131	15132417
15132501	15132724	15132776	15132777	15132778	15132857	15132870	15132932	15133001
15133179	15134050	15134092	15134107	15134716	15134851	15134952	15134957	15136180
15136258	15136484	15136575	15136607	15136610	15136625	15136655	15137004	15137008
15137009	15137011	15137052	15137057	15137075	15137114	15137115	15139001	15139911
15140008	15140606	15141502	15141503	15142199	15142285	15142501	15142553	15142555
15142566	15142631	15142699	15142716	15142763	15142769	15142773	15142832	15143017
15143126	15143135	15143277	15143316	15143489	15143494	15143720	15144140	15144473
15144681	15144683	15144837	15144902	15144910	15144924	15145676	15146052	15146054
15146415	15150034	15150057	15150064	15150180	15150292	15150404	15150550	15150872
15151106	15151264	15151265	15151270	15153839	15153934	15153935	15154589	15155234
15155236	15155238	15155239	15155520	15155523	15155526	15155534	15155535	15155546
15155547	15155569	15155618	15156995	15157353	15157424	15157502	15157507	15157559
15157560	15160485	15160505	15161112	15161119	15161182	15161200	15161316	15161317
15161453	15161860	15161867	15161961	15166843	15166985	15167259	15168785	15168797
15168815	15168840	15169193	15169226	15169342	15169375	15169573	15170082	15170088
15170131	15171326	15171340	15171509	15171516	15171651	15172817	15172912	15172915
15173154	15173564	15173627	15173652	15173663	15173684	15173687	15173739	15174096
15174391	15174515	15174520	15174544	15174555	15174701	15175362	15176396	15176400
15176559	15176571	15176578	15176591	15176680	15176760	15177011	15177028	15177033
15177037	15177109	15177118	15177160	15178072	15180079	15180102	15180252	15180266
15180334	15180364	15180658	15180670	15181008	15181049	15181066	15181345	15181754
15182102	15182123	15182509	15183002	15183239	15183240	15183452	15183776	15183777

15183780	15183828	15183837	15184076	15184096	15184560	15185207	15185241	15185298
15185330	15185349	15185781	15185796	15186567	15186647	15187588	15188232	15188501
15188663	15188917	15188976	15188981	15189817	15190010	15190038	15190043	15190044
15190299	15190309	15190345	15190346	15190361	15190362	15190363	15190364	15190371
15190418	15190553	15190557	15190564	15190565	15190569	15190576	15190601	15190659
15190664	15190711	15190758	15190854	15190880	15190882	15190963	15191022	15191024
15191108	15191202	15191203	15191252	15191256	15191268	15191301	15191302	15191303
15191350	15191379	15191498	15191502	15191523	15191576	15191648	15192018	15192064
15192090	15192449	15192502	15192517	15192525	15192605	15192678	15192765	15192766
15193002	15193251	15193262	15193270	15193351	15193708	15193728	15194661	15194866
15194921	15195051	15195121	15195282	15195373	15195502	15195777	15196027	15196038
15196039	15196047	15196049	15196089	15196104	15196147	15196226	15196227	15196249
15196264	15196281	15196331	15196519	15196802	15196815	15196819	15196820	15196885
15197001	15197004	15197300	15197552	15197553	15197564	15197590	15197593	15197611
15197924	15198453	15198454	15198592	15198610	15198654	15198720	15198745	15198825
15198870	15198891	15199155	15199293	15199359	15199962	15199963	15200051	15200107
15200130	15200182	15200268	15200322	15200501	15200690	15200935	15200943	15201146
15201151	15201382	15201635	15201640	15201653	15202068	15202166	15202214	15202241
15202252	15202371	15202751	15202772	15202860	15202939	15203005	15203155	15203163
15204075	15204191	15204337	15204549	15204625	15204626	15204957	15204959	15205254
15205352	15206381	15206382	15207699	15207789	15207856	15208067	15208108	15208280
15208291	15208404	15208459	15208542	15208561	15208562	15208565	15208566	15208712
15208975	15209101	15209115	15209595	15209601	15209611	15210042	15210670	15211087
15211407	15211898	15213255	15213311	15213336	15213505	15213561	15213565	15213632
15213638	15213640	15213792	15213919	15214010	15214025	15214162	15214197	15214565
15214579	15215082	15215333	15215377	15215432	15215911	15216719	15216741	15217088
15219425	15219754	15220040	15220052	15220945	15221407	15221518	15221673	15221967
15221997	15222053	15222065	15222517	15222739	15223353	15223516	15223519	15223540
15223616	15223635	15224092	15224381	15224400	15224491	15224500	15224559	15224694
15224713	15224735	15225254	15225264	15225265	15225823	15225996	15226013	15226016
15226234	15226415	15226436	15226546	15226735	15226911	15227148	15227183	15228299
15228445	15228517	15228544	15228609	15228980	15228981	15229481	15229718	15230155
15230421	15230468	15230705	15231257	15232322	15232323	15232772	15233197	15233271
15233301	15233391	15233443	15235001	15235525	15235717	15238487	15238488	15238562
15239051	15239680	15239727	15240060	15240156	15240157	15240937	15241502	15241833
15242779	15243387	15243700	15243797	15244034	15244117	15244191	15244388	15244402
15244406	15245052	15245118	15245122	15245134	15245273	15245274	15246050	15246254
15246301	15246304	15246666	15246673	15247066	15247491	15247568	15247812	15248081
15248256	15248443	15249168	15249235	15249236	15249320	15249403	15249412	15249910
15250639	15250728	15250738	15251126	15251702	15251920	15252079	15252101	15252444
15252510	15252527	15252766	15252779	15252898	15252966	15253553	15253935	15254105
15254317	15254324	15254837	15255061	15255062	15255526	15255740	15256501	15256547
15256562	15256579	15256594	15258353	15258368	15259029	15259126	15259360	15259827
15259831	15259934	15260171	15260264	15260540	15260604	15260605	15260930	15260949
15261103	15261689	15261902	15261915	15261936	15262222	15262251	15262252	15262488
15262505	15262614	15263183	15263206	15263330	15263603	15263801	15263814	15263825
15264126	15264237	15264277	15264501	15264683	15264731	15264847	15264848	15264879
15264883	15264886	15264894	15264901	15264928	15265089	15265090	15265233	15265403
15265460	15266032	15266034	15266172	15266374	15266394	15266703	15267069	15267071
15268040	15268202	15268567	15268638	15268826	15269405	15269426	15270157	15270217
15272251	15272252	15272336	15275261	15275963	15275980	15277961	15278599	15278676
15278678	15278682	15278683	15278684	15278685	15278686	15278687	15278688	15278690
15279155	15280062	15280326	15280331	15280350	15281493	15282051	15282174	15282175
15282267	15282304	15282325	15282639	15285811	15287937	15288149	15290254	15290302
15290332	15290514	15290978	15291008	15291448	15292262	15292379	15292552	15292763
15293070	15293284	15293302	15293813	15293966	15294019	15294023	15294053	15294056
15294076	15294140	15294552	15294927	15296351	15296352	15296671	15296807	15297297
15297372	15298300	15298401	15298667	15298708	15298762	15298763	15298877	15298951
15300189	15301079	15301779	15301902	15302052	15302382	15302773	15303229	15303934
15304159	15304386	15305025	15305252	15305354	15305881	15306075	15306115	15306647
15307040	15308230	15308516	15308551	15308552	15308555	15308572	15308876	15308956
15309415	15310020	15310038	15310055	15310069	15310071	15310072	15310073	15310181
15310263	15310273	15310385	15312251	15312499	15313051	15314076	15314429	15315369

15316072	15316133	15316309	15316364	15316403	15316711	15317880	15318727	15319751
15320961	15322556	15322602	15322800	15322808	15322916	15322923	15323001	15323027
15323388	15323911	15323937	15323945	15324174	15324407	15324429	15324620	15324764
15324774	15324838	15325301	15325450	15325779	15325839	15325954	15326169	15326523
15326525	15326617	15326664	15326683	15326708	15326709	15326719	15326720	15326790
15326907	15326913	15327117	15327118	15327177	15327183	15327205	15327226	15327402
15327700	15327776	15328038	15328141	15328251	15328478	15328657	15328727	15329055
15329279	15329347	15330026	15330027	15330028	15330029	15330030	15330032	15330033
15330119	15330776	15330781	15330782	15330783	15330898	15330916	15331096	15331161
15331164	15331258	15331505	15331599	15331632	15331644	15332061	15332678	15332737
15333312	15333850	15334109	15334502	15334506	15334516	15334785	15336030	15336041
15336540	15336561	15336909	15338717	15339127	15339128	15339570	15339608	15339917
15340207	15340242	15340506	15340592	15340685	15340700	15340748	15340808	15340864
15341009	15341295	15342220	15342326	15345043	15345452	15345461	15345518	15345773
15346211	15346758	15346976	15347469	15347786	15347810	15347820	15347846	15348777
15348908	15350057	15350206	15350242	15350397	15350402	15350601	15351501	15351579
15351613	15351754	15352035	15352057	15352129	15352130	15352133	15352442	15354788
15354889	15354932	15355414	15355691	15355751	15355868	15355904	15359656	15360972
15363707	15364022	15364154	15366141	15366278	15366300	15366482	15368051	15368127
15368158	15368232	15369510	15369574	15370034	15370053	15370151	15370296	15370330
15370396	15370679	15370727	15370819	15370820	15370842	15371266	15371321	15371397
15372827	15372875	15372962	15373061	15375249	15375383	15375636	15375726	15376066
15376072	15376194	15376364	15376655	15377180	15377644	15378277	15378579	15378580
15378675	15378756	15379864	15380027	15380127	15381026	15381251	15381283	15381284
15381285	15381286	15381288	15381289	15381331	15381701	15382360	15383216	15384502
15384631	15384659	15384740	15385551	15385559	15385885	15385986	15386127	15386216
15386330	15386362	15386402	15386525	15387526	15388049	15388295	15388829	15390084
15390092	15390093	15390146	15390165	15390197	15390228	15390232	15390239	15390253
15390255	15390277	15390283	15390286	15390292	15390356	15390466	15390481	15392487
15392664	15393166	15393497	15394476	15394477	15394977	15394978	15395175	15395518
15395539	15397123	15399010	15400156	15400191	15400335	15400660	15400687	15400806
15400917	15400925	15401118	15401131	15401255	15401354	15401452	15401780	15402090
15402091	15402170	15402973	15403769	15404188	15404433	15404502	15405405	15405867
15405881	15405885	15406064	15406079	15406156	15406472	15406627	15406735	15407026
15407035	15407462	15407766	15407928	15408434	15408600	15409002	15409045	15409103
15409237	15409259	15409386	15409387	15410172	15414388	15418213	15418214	15418364
15418367	15418368	15418371	15418435	15419079	15419324	15419556	15419985	15420637
15420651	15420725	15420741	15421976	15422052	15423034	15423129	15423239	15423533
15424152	15424256	15424262	15424263	15424264	15424265	15424266	15424268	15424271
15424275	15424276	15424282	15424289	15424290	15424298	15424300	15424316	15424322
15424325	15424816	15425574	15425824	15425832	15425843	15425847	15425873	15426114
15426849	15426850	15426851	15426852	15426856	15426858	15426859	15426860	15427096
15427228	15427229	15427702	15428115	15428223	15428387	15430454	15430841	15430978
15431775	15431778	15432588	15432872	15433405	15433672	15433675	15434008	15434250
15434361	15435183	15435576	15435780	15435781	15435852	15436110	15436243	15436266
15436366	15436673	15437164	15437268	15437368	15437376	15437506	15437983	15438252
15438513	15438963	15439712	15440110	15442903	15442920	15443805	15443815	15444925
15444985	15446265	15447324	15447526	15448435	15449080	15450777	15451097	15451120
15451558	15451694	15451742	15451874	15451969	15452068	15452147	15452195	15452426
15452452	15453376	15453417	15453774	15453856	15453902	15453926	15454734	15454790
15455204	15455348	15455839	15456208	15456872	15458432	15459394	15459569	15459714
15459747	15462756	15462757	15462760	15464581	15464999	15465076	15465255	15466419
15468540	15469708	15469726	15471667	15471753	15472558	15476454	15479481	15480384
15481985	15482678	15482679	15482680	15482683	15482687	15482732	15484870	15488529
15488626	15488701	15489093	15489179	15489258	15492452	15493626	15493701	15493703
15493728	15494010	15494011	15494032	15494062	15494080	15495753	15495754	15496558
15496578	15497053	15497579	15497911	15498919	15498921	15499781	15501528	15502278
15505094	15506456	15508597	15508670	15509021	15509059	15509823	15510854	15512120
15512191	15514338	15514726	15516215	15516326	15516327	15516337	15516360	15517146
15518306	15518321	15518322	15518403	15518420	15518476	15519086	15519309	15519531
15519576	15519731	15519742	15519838	15519892	15520001	15520291	15521034	15521067
15521139	15521267	15521651	15521749	15521782	15522102	15522276	15522308	15522899
15522942	15523996	15524138	15524190	15524528	15524750	15524919	15525206	15528308



होलिकोत्सव पर एक अनोखी भेंट

होली के दिन लक्ष्मणजी को श्रीरामजी की चरणसेवा मिली थी। इस बारे में एक लोककथा प्रचलित है : श्रीरामजी विवाह के बाद अयोध्या पधारे, तब उनकी चरणसेवा लक्ष्मणजी के स्थान पर सीताजी करने लगीं। लक्ष्मणजी चरणसेवा करने जायें तो सीताजी ना तो नहीं कहतीं लेकिन मर्यादा के अनुसार जब तक वे स्वंय बुलाये नहीं तब तक लक्ष्मणजी को वहाँ जाना उचित नहीं लगता था। अतः लक्ष्मणजी इधर-उधर चक्कर काटते रहते थे । न सीताजी लक्ष्मणजी को बुलातीं और न उन्हें चरणसेवा का मौका मिलता। परिणामस्वरूप लक्ष्मणजी दुःखी रहने लगे कि प्रभु श्रीरामजी की चरणसेवा न मिले तो जीने का क्या अर्थ ? इसी विचार से उनका शरीर सूखने लगा। एक बार रामजी ने पूछा : ''लक्ष्मण ! तुम्हारा शरीर क्यों सूखता जा रहा है ?''

लक्ष्मणजी : ''प्रभु ! आप तो जानते ही हैं कि मुझे कई दिनों से आपकी चरणसेवा नहीं मिली।''

रामजी : ''जब तुम मेरी सेवा के लिए यहाँ आते हो तो तुम्हें कौन ना कहता है ?''

लक्ष्मणजी : ''माताजी मुझे देखती तो हैं लेकिन बुलाती नहीं हैं । मैं आपकी चरणसेवा बिना नहीं जी सकूँगा, प्रभु !''

रामजी : ''इसमें मैं क्या कर सकता हूँ ? वह धर्मपत्नी है, उसका प्रथम अधिकार है।''

लक्ष्मणजी : ''प्रभु ! कुछ तो उपाय करें।''

रामजी : ''लखन ! एक उपाय है । चार दिन के बाद होली का त्यौहार आ रहा है। तू तो जानता ही है कि अपने रघुकुल में यह रीति है कि इस दिन देवर भाभी के साथ होली खेलते हैं और शाम को बड़ों की उपस्थिति में देवर भाभी से जो कुछ भी माँगता है वह भाभी को देना ही पड़ता है। इस बार तुम, शत्रुघ्न और भरत सीता के साथ होली खेलकर शाम को सीता से माँगने जाओ, तब अपनी इच्छा पूरी कर लेना।''

प्रभु की बतायी हुई युक्ति से लक्ष्मणजी नाचने लगे और अधीर होकर कहने लगे : ''बस, अब होली जल्दी आये ऐसा कुछ करो।'' (शेष भाग पृष्ठ १९ पर)

15528313	15528809	15529585	15529589	15530460	15530771	15530817	15530832	15531052
15531065	15532230	15534167	15536760	15537532	15537651	15537664	15537669	15537876
15538018	15538460	15538533	15538546	15538547	15538942	15539051	15539069	15539111
15539121	15539127	15539275	15539394	15541358	15541452	15541647	15542950	15543641
15543729	15543742	15543940	15543941	15545235	15545353	15545777	15546378	15546818
15546837	15546838	15547343	15548004	15548091	15548174	15548182	15548684	15548903
15549027	15549530	15549669	15549815	15549821	15550050	15550068	15550109	15550122
15550672	15550751	15550811	15550824	15550956	15550961	15550963	15550966	15550967
15550968	15550969	15550970	15550972	15550973	15550974	15550975	15551058	15551064
15551267	15551476	15551498	15551501	15551502	15551681	15551693	15551694	15551697
15551701	15551703	15551711	15551713	15551719	15552564	15552567	15552581	15552587
15552807	15553151	15553240	15553565	15553567	15553627	15553703	15553706	15554205
15555073	15555505	15557277	15557298	15557330	15557371	15570069	15570226	15570951
15571294	15571301	15571397	15571675	15571678	15571682	15571753	15571768	15571897
15572155	15572499	15572511	15572633	15573105	15573380	15573386	15577220	15581019
15582726	15582744	15584876	15585077	15585851	15586814	15586815	15587105	15589776
15589896	15590044	15590060	15590105	15590124	15590351	15590352	15590353	15590360
15590632	15590761	15590967	15591280	15591374	15591769	15591779	15591878	15592031
15592205	15592259	15592430	15592449	15593385	15593395	15593665	15594542	15595182
15595845	15599135	15599144	15599166	15599190	15599191	15603077	15603099	15603100
15604317	15604332	15604598	15605580	15605609	15608257	15608539	15610070	15610292
15610327	15610387	15610408	15610769	15610880	15610958	15611019	15611072	15611073
15611113	15612164	15612277	15612476	15612562	15612685	15612727	15612757	15612785
15612801	15612921	15612934	15613583	15614690	15616186	15616469	15617234	15619404
15620118	15621344	15622537	15625167	15627606	15627656	15627695	15630813	15630842
15630848	15632519	15632522	15632674	15633855	15634200	15634969	15634975	15634977
15635256	15635352	15635359	15635441	15635992	15635994	15636248	15636280	15636292
15636519	15637323	15637543	15637598	15637620	15637726	15638378	15641431	15641606

15641751 15641786

रामजी : ''होली तो जब आयेगी तभी आयेगी न।''

लक्ष्मणजी ने तो 'होली' का जप करना शुरू कर दिया कि होली जल्दी आये।

चार दिन पूरे हुए। होली का सूर्योदय हुआ। रंगों के दर्शन होने लगे। सीताजी के साथ लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न पवित्रता से होली खेले।

शाम होते ही सर्वप्रथम भरत सीताजी के पास आये और उनके चरणस्पर्श कर बोले : ''मुझे तो यह वरदान दीजिये कि मैं जन्म-जन्मांतर तक प्रभु श्रीरामजी के चरणों में रहूँ, उनकी भक्ति पाऊँ।''

सीताजी : ''तथाऽस्तु।'' अर्थात् ऐसा ही हो।

फिर शत्रुघ्न की बारी आयी। उन्होंने कहा : ''भरतजी ने जन्म-जन्मांतर तक प्रभु श्रीरामजी की भक्ति माँगी है तो मुझे जन्म-जन्मांतर तक भरतजी की भक्ति मिले, मैं उनकी सेवा करूँ। श्रीरामजी के सेवक का सेवक बनूँ।''

सीताजी : ''तथाऽस्तु।''

तत्पश्चात् सीताजी ने लक्ष्मणजी से कहा : ''माँगो।''

लक्ष्मणजी : ''माताजी ! होली की और कोई भेंट तो मुझे नहीं चाहिए, केवल श्रीरामजी की चरणसेवा का अधिकार मेरा बने।''

प्रभु श्रीरामजी के चरणों की सेवा का अधिकार माँगने की बात सुनते ही सीताजी बेहोश हो गयीं क्योंकि वे रघुवंश की पुत्रवधु होने से वचन तोड़ नहीं सकती थीं। वैद्यों-हकीमों ने औषधियाँ दीं, फिर भी उनकी मूर्च्छा न टूटी।

तब लक्ष्मणजी दौड़े श्रीरामजी के पास। श्रीरामजी ने लक्ष्मणजी को एक युक्ति बतायी। उसके अनुसार लक्ष्मणजी सीताजी के पास गये और उनके कान में धीरे-से कहा : ''माताजी ! चरणसेवा के अधिकार में हम दोनों बँटवारा कर लें। दायाँ चरण मेरा और बायाँ चरण आपका। जब आप चरणों की सेवा करने जाओगी तब मुझे सामने से बुला लिया करेंगी।''

यह सुनकर सीताजी की मूर्च्छा उतर गयी।

प्रभु द्वारा बतायी गयी युक्ति से सीताजी और लक्ष्मण, दोनों खुश हो गये।



सेवा भगवत्पूजा है। दहिसर, मुंबई (महा.), जयपुर, जि. कोरापुट (उड़ीसा) तथा राउरकेला जि. सुन्दरगढ़ (उड़ीसा) में पूज
शिष्यों द्वारा गरीबों व आदिवासियों में अन्न, वस्त्रादि जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण।



नास्ति ध्यानसमं तपः। मोटी मारड, तह. धोराजी, जि. राजकोट (गुज.) की छात्राएँ ध्यान का लाभ लेते हुए।



हरिनाम संकीर्तन करते हुए पूज्य सद्गुरुदेव के पावन संदेशों का प्रसार कर रहे हैं बाल संस्कार केन्द्र, प्रकाशा, जि. नंदुरबार (महा.) के बच्चे।



सत्संग से ही सत्प्रेरणा, सन्मति और सद्म
तिहाड़ जेल, दिल्ली के कैदियों के लिए
विडियो सत्संग का आयोजन किया

संपादक : सि.ना. अग्रवाल ✲ प्रकाशक और मुद्रक : राजेन्द्र आर्य, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अमदावाद-५ ने भार्गवी ऑफसेट, राणीप, अमदावाद में छपाकर
REGISTRED WITH R.N.I. UNDR NO. 66692/97 (Hindi) 66693/97 (gujarati) regd. NO. GAMC/1253/97. LICENSED TO POST W/O PRE-PAYMENT: AHMEDABAD PSO LICE